अनुक्रमणिका

विषय / अध्याय	पृष्ठ
1. बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र	1 - 282
2. सामान्य हिंदी	283 - 414
3. General English	415 - 548
4. गणित	549 - 670
5. पर्यावरण	671 - 785
6. Computer	786 - 873
7. सामान्य ज्ञान, विज्ञान, छत्तीसगढ़	874 - 1040

बाल विकास एवं शिक्षा शास्त्र: शिक्षा मनोविज्ञान, बाल मनोविज्ञान, वृद्धि एवं विकास, विकास की अवस्थाएं, विकास को प्रभावित करने वाले कारक, विकास के आयाम, बाल विकास एवं बाल विकास के सिद्धांत

पैटर्न: One-liner GK

प्र.1 शिक्षा मनोविज्ञान (Educational Psychology) **का जनक किसे माना जाता है?**

A जीन पियाजे

B एडवर्ड ली थॉर्नडाइक

C सिगमंड फ्रायड

D बी.एफ. स्किनर

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
शिक्षा मनोविज्ञान का जनक 'एडवर्ड ली थॉर्नडाइक' (E.L. Thorndike) को माना जाता है। उन्होंने सीखने के नियमों (Laws of Learning) का प्रतिपादन किया और मनोविज्ञान के सिद्धांतों को शिक्षा के क्षेत्र में लागू करने की नींव रखी। उनकी प्रसिद्ध पुस्तक 'Educational Psychology' (1903) ने इस विषय को एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में स्थापित किया। विकल्प (A) जीन पियाजे संज्ञानात्मक विकास के लिए जाने जाते हैं, (C) सिगमंड फ्रायड मनोविश्लेषणवाद के जनक हैं, और (D) बी.एफ. स्किनर क्रियाप्रसूत अनुबंधन के लिए प्रसिद्ध हैं। थॉर्नडाइक ने 'प्रयास एवं त्रुटि' (Trial and Error) का सिद्धांत भी दिया था।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.2 बाल विकास के संदर्भ में 'अभिवृद्धि' (Growth) **शब्द का प्रयोग मुख्य रूप से किस परिवर्तन के लिए किया जाता है?**

A सामाजिक परिवर्तन

B मानसिक परिवर्तन

C शारीरिक एवं मात्रात्मक परिवर्तन

D नैतिक परिवर्तन

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
बाल विकास में 'अभिवृद्धि' (Growth) का तात्पर्य बालक के शरीर के अंगों के आकार, भार और लंबाई में होने वाले 'शारीरिक एवं मात्रात्मक' परिवर्तनों से है। अभिवृद्धि एक समय के बाद (परिपक्वता प्राप्त करने पर) रुक जाती है, जबकि विकास (Development) जीवनपर्यंत चलता रहता है। विकल्प (A), (B) और (D) विकास के गुणात्मक आयामों (सामाजिक, मानसिक, नैतिक) को दर्शाते हैं, जिन्हें केवल अभिवृद्धि नहीं कहा जा सकता। अभिवृद्धि को मापा और तौला जा सकता है, जैसे कि ऊंचाई को सेंटीमीटर में मापना। विकास एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें अभिवृद्धि भी शामिल होती है।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.3 विकास के 'शिर:पदाभिमुख' (Cephalocaudal) **सिद्धांत के अनुसार, बालक का विकास किस दिशा में होता है?**

A पैर से सिर की ओर

B मध्य से बाहर की ओर

C सिर से पैर की ओर

D सामान्य से विशिष्ट की ओर

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
विकास का 'शिर:पदाभिमुख' (Cephalocaudal) सिद्धांत यह बताता है कि बालक का विकास 'सिर से पैर की ओर' (Head to Toe) होता है। जन्म के बाद बालक सबसे पहले अपने सिर पर नियंत्रण करना सीखता है, फिर हाथों की गति पर और अंत में पैरों पर नियंत्रण पाकर चलना सीखता है। विकल्प (A) वैज्ञानिक रूप से गलत है। विकल्प (B) 'समीप-दूराभिमुख' (Proximodistal) सिद्धांत को दर्शाता है, जिसमें विकास केंद्र से परिधि की ओर होता है। विकल्प (D) विकास के एक अन्य सामान्य सिद्धांत को बताता है। याद रखने के लिए: 'Cephalo' का अर्थ सिर और 'Caudal' का अर्थ पूंछ या निचला हिस्सा होता है।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.4 बाल विकास की किस अवस्था को 'खिलौनों की आयु' (Toy Age) **के नाम से जाना जाता है?**

A शैशवावस्था

B पूर्व-बाल्यावस्था

C उत्तर-बाल्यावस्था

D किशोरावस्था

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
'पूर्व-बाल्यावस्था' (Early Childhood), जो सामान्यत: 2 से 6 वर्ष तक की होती है, को 'खिलौनों की आयु' (Toy Age) कहा जाता है। इस अवस्था में बालक खिलौनों के साथ खेलना सबसे अधिक पसंद करता है और उनमें सजीवता का अनुभव करता है। विकल्प (A) शैशवावस्था (जन्म से 2 वर्ष) मुख्य रूप से इंद्रिय-जनित गामक अवस्था है। विकल्प (C) उत्तर-बाल्यावस्था को 'खेल की आयु' (Game Age) या 'टोली की अवस्था' (Gang Age) कहा जाता है क्योंकि इसमें बच्चा समूह में खेलना शुरू करता है। विकल्प (D) किशोरावस्था तनाव और तूफान की अवस्था मानी जाती है। पूर्व-बाल्यावस्था भाषा सीखने की दृष्टि से भी अत्यंत संवेदनशील काल है।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.5 "विकास, वंशानुक्रम और वातावरण का गुणनफल है" ($D = HtimesE$), यह प्रसिद्ध कथन किस मनोवैज्ञानिक का है?

A वुडवर्थ

B वाटसन

C गैसेल

D स्किनर

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
यह प्रसिद्ध कथन 'आर.एस. वुडवर्थ' (Woodworth) का है। उनके अनुसार, बालक का विकास उसके वंशानुक्रम (Heredity) और वातावरण (Environment) की अंत:क्रिया का परिणाम है। विकास में इन दोनों कारकों का महत्व योगात्मक ($H + E$) न होकर गुणात्मक ($HtimesE$) होता है। विकल्प (B) जे.बी. वाटसन व्यवहारवाद के जनक हैं जिन्होंने वातावरण को अत्यधिक महत्व दिया था। विकल्प (C) गैसेल ने परिपक्वता के सिद्धांत पर बल दिया। विकल्प (D) स्किनर ने सीखने की प्रक्रिया पर शोध किया। वुडवर्थ का मानना था कि वंशानुक्रम हमें बीज प्रदान करता है और वातावरण उसे विकसित होने के लिए उपयुक्त भूमि और जलवायु देता है।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.6 बाल मनोविज्ञान (Child Psychology) का जनक किसे माना जाता है?

A जीन पियाजे

B बी.एफ. स्किनर

C ई.एल. थार्नडाइक

D अल्बर्ट बांडुरा

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
जीन पियाजे को बाल मनोविज्ञान का जनक माना जाता है क्योंकि उन्होंने बच्चों के संज्ञानात्मक विकास पर व्यापक शोध किया और यह बताया कि बच्चे वयस्कों की तुलना में अलग तरह से सोचते हैं। पियाजे ने विकास की चार मुख्य अवस्थाएं (संवेदी-पेशीय, पूर्व-संक्रियात्मक, मूर्त-संक्रियात्मक और औपचारिक संक्रियात्मक) बताई थीं। अन्य विकल्पों की बात करें तो ई.एल. थार्नडाइक को 'शिक्षा मनोविज्ञान' का जनक माना जाता है, बी.एफ. स्किनर क्रियाप्रसूत अनुबंधन के लिए प्रसिद्ध हैं और अल्बर्ट बांडुरा ने सामाजिक अधिगम सिद्धांत दिया था। पियाजे का मानना था कि बच्चा एक 'नन्हा वैज्ञानिक' है जो अपने ज्ञान की रचना स्वयं करता है।

संबंधित तथ्य:
• पियाजे ने 'जेनेटिक एपिस्टेमोलॉजी' की स्थापना की थी।
• उन्होंने विकास को एक क्रमिक और अपरिवर्तनीय प्रक्रिया माना।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.7 विकास के 'समीप-दूराभिमुख' (Proximodistal) सिद्धांत के अनुसार, बालक के विकास का क्रम क्या होता है?

A सिर से पैर की ओर

B पैर से सिर की ओर

C शरीर के केंद्र से बाहर (अंगों) की ओर

D बाहर से केंद्र की ओर

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

समीप-दूराभिमुख (Proximodistal) सिद्धांत के अनुसार, विकास शरीर के मध्य भाग (केंद्र) से शुरू होकर बाहर की ओर या परिधि की ओर बढ़ता है। उदाहरण के लिए, एक शिशु पहले अपनी रीढ़ की हड्डी और धड़ पर नियंत्रण पाता है, उसके बाद वह अपनी भुजाओं और अंत में अपनी उंगलियों का उपयोग करना सीखता है। विकल्प A 'शिरःपदाभिमुख' (Cephalocaudal) सिद्धांत को दर्शाता है जिसमें विकास सिर से पैर की ओर होता है। विकल्प B और D विकास के किसी स्थापित सिद्धांत का प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि शारीरिक नियंत्रण का विस्तार केंद्र से दूरस्थ अंगों की ओर होता है।

संबंधित तथ्य:
• यह शारीरिक विकास की दिशा का एक महत्वपूर्ण नियम है।
• सूक्ष्म गत्यात्मक कौशल (Fine Motor Skills) का विकास इसी क्रम के अंत में होता है।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.8 "किशोरावस्था बड़े संघर्ष, तनाव, तूफान और विरोध की अवस्था है।" यह प्रसिद्ध कथन किस मनोवैज्ञानिक का है?

A ई.ए. किलपैट्रिक

B जी. स्टेनली हॉल

C जर्सील्ड

D क्रो एवं क्रो

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

जी. स्टेनली हॉल ने अपनी प्रसिद्ध पुस्तक 'Adolescence' (1904) में किशोरावस्था को 'तनाव और तूफान' (Stress and Storm) की अवधि कहा है। उनके अनुसार, इस अवस्था में किशोरों के भीतर तीव्र शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक परिवर्तन होते हैं, जिससे उनमें अंतर्द्वंद्व पैदा होता है। विकल्प A (किलपैट्रिक) ने किशोरावस्था को 'जीवन का सबसे कठिन काल' कहा था। विकल्प D (क्रो एवं क्रो) के अनुसार किशोर ही वर्तमान की शक्ति और भावी आशा को प्रस्तुत करता है। स्टेनली हॉल को 'किशोरावस्था के मनोविज्ञान का जनक' भी कहा जाता है क्योंकि उन्होंने इस अवस्था का वैज्ञानिक अध्ययन किया था।

संबंधित तथ्य:
• स्टेनली हॉल ने किशोरावस्था के लिए 'पुनरावृत्ति का सिद्धांत' भी दिया था।
• उन्होंने किशोरों के व्यवहार में आने वाले आकस्मिक परिवर्तनों पर बल दिया।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.9 विकास के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा परिवर्तन 'गुणात्मक' (Qualitative) प्रकृति का होता है?

A शरीर के वजन में वृद्धि

B बालक की लंबाई का बढ़ना

C कार्य कुशलता और व्यवहार में सुधार

D हड्डियों के आकार में वृद्धि

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

विकास एक व्यापक प्रक्रिया है जिसमें मात्रात्मक और गुणात्मक दोनों परिवर्तन शामिल होते हैं। 'कार्य कुशलता, समझ और व्यवहार में सुधार' गुणात्मक परिवर्तन के उदाहरण हैं क्योंकि इन्हें मापा नहीं जा सकता, बल्कि महसूस या प्रेक्षित किया जा सकता है। इसके विपरीत, विकल्प A, B और D 'अभिवृद्धि' (Growth) के उदाहरण हैं, जो केवल मात्रात्मक (Quantitative) होते हैं और जिन्हें किलोग्राम या सेंटीमीटर में मापा जा सकता है। विकास का अर्थ परिपक्वता और अनुभव के परिणामस्वरूप होने वाले प्रगतिशील परिवर्तनों की श्रृंखला से है।

संबंधित तथ्य:
• अभिवृद्धि विकास का ही एक हिस्सा है जो एक समय के बाद रुक जाती है।
• विकास जीवनपर्यंत चलने वाली (Womb to Tomb) प्रक्रिया है।

पैटर्न: One-liner GK

प्र.10 विकास के 'वर्तुलाकार बनाम रेखीय' (Spiral vs Linear) सिद्धांत के अनुसार विकास की प्रकृति कैसी होती है?

A विकास एक सीधी रेखा में निरंतर चलता है

B विकास की गति हमेशा एक समान रहती है

C विकास आगे बढ़ते हुए पीछे मुड़कर अपने अनुभवों को संचित करता है

D विकास केवल आनुवंशिकता पर निर्भर करता है

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

विकास का वर्तुलाकार (Spiral) सिद्धांत यह बताता है कि विकास एक सीधी रेखा (Linear) में नहीं होता है। बालक किसी एक क्षेत्र में तेजी से आगे बढ़ता है, फिर वह अपनी प्रगति को स्थायी बनाने और अनुभवों को संचित करने के लिए कुछ समय के लिए रुकता या पीछे की ओर मुड़ता (Consolidation) है, और फिर आगे बढ़ता है। विकल्प A और B गलत हैं क्योंकि विकास की गति कभी स्थिर नहीं रहती और न ही यह रेखीय होता है। विकल्प D गलत है क्योंकि विकास आनुवंशिकता और वातावरण दोनों की अंत:क्रिया का परिणाम है। यह सिद्धांत स्पष्ट करता है कि विकास में लचीलापन और सुदृढ़ीकरण की प्रक्रिया साथ-साथ चलती है।

संबंधित तथ्य:
- विकास की गति अलग-अलग अवस्थाओं में भिन्न-भिन्न होती है।
- वर्तुलाकार प्रगति बालक के सर्वांगीण विकास को सुनिश्चित करती है।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.11 बाल विकास के सिद्धांतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों पर विचार कीजिए और कूट की सहायता से सही उत्तर का चयन कीजिए:

1. विकास एक सतत प्रक्रिया है जो गर्भाधान से मृत्यु तक निरंतर चलती रहती है।

2. विकास की गति सभी बालकों में एक समान और स्थिर होती है।

3. विकास हमेशा 'सामान्य से विशिष्ट' (General to Specific) क्रियाओं की ओर अग्रसर होता है।

4. विकास एक प्रतिवर्ती (Reversible) प्रक्रिया है, जिसे पीछे की ओर मोड़ा जा सकता है।

A केवल 1, 2 और 3 सही हैं

B केवल 1 और 3 सही हैं

C केवल 2 और 4 सही हैं

D सभी कथन 1, 2, 3 और 4 सही हैं

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही उत्तर विकल्प B है क्योंकि कथन 1 और 3 पूरी तरह सत्य हैं। विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है जो कभी नहीं रुकती। साथ ही, बालक पहले सामान्य गतिविधियाँ करता है (जैसे पूरे हाथ से वस्तु पकड़ना) और बाद में विशिष्ट कौशल (जैसे उंगलियों से पकड़ना) सीखता है। कथन 2 गलत है क्योंकि 'वैयक्तिक भिन्नता' के सिद्धांत के अनुसार हर बालक के विकास की दर अलग होती है। कथन 4 गलत है क्योंकि विकास 'अप्रतिवर्ती' (Irreversible) होता है; एक बार जो विकास हो गया उसे वापस पूर्व अवस्था में नहीं लाया जा सकता, हालांकि उसमें सुधार (Modify) संभव है। विकास वर्तुलाकार होता है न कि रेखीय। विकास के सिद्धांतों को समझना शिक्षकों के लिए शिक्षण विधियों के चयन में सहायक होता है।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.12 विकास की अवस्थाओं और उनकी विशेषताओं के संबंध में निम्नलिखित कथनों का परीक्षण करें और सही कूट चुनें:

K. शैशवावस्था (Infancy) को 'सीखने का आदर्श काल' माना जाता है।

L. पूर्व-बाल्यावस्था (Early Childhood) को 'टोली-पूर्व अवस्था' (Pre-gang age) कहा जाता है।

M. उत्तर-बाल्यावस्था (Late Childhood) में बालक में तार्किक एवं अमूर्त चिंतन पूर्णत: विकसित हो जाता है।

N. किशोरावस्था को 'जीवन का सबसे कठिन काल' कहा जाता है।

A केवल K, L और M सही हैं

B केवल L, M और N सही हैं

C केवल K, L और N सही हैं

D सभी कथन K, L, M और N सही हैं

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही उत्तर विकल्प C है। कथन K सत्य है क्योंकि इस अवस्था में अनुकरण और दोहराने की प्रवृत्ति तीव्र होती है। कथन L भी सत्य है क्योंकि बालक इस समय समूह में रहने की तैयारी करता है। कथन N सत्य है क्योंकि किशोरावस्था शारीरिक और मानसिक परिवर्तनों के कारण अत्यधिक तनावपूर्ण होती है। कथन M गलत है क्योंकि उत्तर-बाल्यावस्था (7-12 वर्ष) में बालक केवल 'मूर्त' (Concrete) वस्तुओं पर तार्किक चिंतन कर पाता है; 'अमूर्त' (Abstract) चिंतन की क्षमता किशोरावस्था में विकसित होती है। उत्तर-बाल्यावस्था को 'गंदी अवस्था' (Dirty age) और 'खेल की आयु' भी कहा जाता है। किशोरावस्था को 'अटपटी अवस्था' के रूप में भी जाना जाता है।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.13 विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों में से सही युग्म की पहचान कीजिए:

1. आनुवंशिकता (Heredity) बालक के विकास की ऊपरी सीमाएं या क्षमताएं निर्धारित करती है।

2. वातावरण (Environment) केवल बालक के जन्म के बाद के कारकों को समाहित करता है।

3. अंत:स्रावी ग्रंथियों का असंतुलन बालक के शारीरिक और मानसिक विकास को बाधित कर सकता है।

4. संस्कृति और सामाजिक परिवेश का बालक के संवेगात्मक विकास पर कोई प्रभाव नहीं पड़ता है।

A केवल 1 और 2 सही हैं

B केवल 2 और 4 सही हैं

C केवल 1 और 3 सही हैं

D केवल 3 और 4 सही हैं

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
सही उत्तर विकल्प C है। कथन 1 सत्य है क्योंकि आनुवंशिकता विकास के लिए एक आधार प्रदान करती है। कथन 3 भी सत्य है क्योंकि थायराइड जैसी ग्रंथियों का स्राव विकास को सीधे प्रभावित करता है। कथन 2 गलत है क्योंकि वातावरण में 'आंतरिक वातावरण' (गर्भाशय की स्थिति) भी शामिल होता है जो जन्म से पूर्व प्रभावी होता है। कथन 4 गलत है क्योंकि बालक जिस समाज और संस्कृति में रहता है, उसके संवेग और व्यवहार उसी के अनुरूप ढलते हैं। विकास वास्तव में आनुवंशिकता और वातावरण की अंत:क्रिया का परिणाम है। पोषण, बीमारी और पारिवारिक वातावरण भी विकास के महत्वपूर्ण बाह्य कारक हैं।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.14 विकास के विभिन्न आयामों (Dimensions) के अंत:संबंधों के बारे में दिए गए कथनों पर विचार करें:

K. शारीरिक विकास का प्रभाव बालक के संज्ञानात्मक और सामाजिक विकास पर पड़ता है।

L. गामक विकास (Motor Development) का अर्थ केवल बालक की लंबाई और वजन में वृद्धि होना है।

M. भाषाई विकास, संज्ञानात्मक विकास का ही एक अभिन्न अंग माना जाता है।

N. संवेगात्मक रूप से अस्थिर बालक का सामाजिक समायोजन प्राय: कठिन होता है।

A केवल K, M और N सही हैं

B केवल K और L सही हैं

C केवल L, M और N सही हैं

D सभी कथन K, L, M और N सही हैं

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
सही उत्तर विकल्प A है। विकास के सभी आयाम (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक, संवेगात्मक) एक-दूसरे से गहराई से जुड़े हुए हैं (Interrelatedness)। कथन K, M और N इसी अंत:संबंध को दर्शाते हैं। कथन L गलत है क्योंकि लंबाई और वजन में वृद्धि 'अभिवृद्धि' (Growth) है, जबकि गामक विकास का अर्थ मांसपेशियों पर नियंत्रण और शारीरिक कौशल (जैसे चलना, लिखना) प्राप्त करना है। संज्ञानात्मक विकास के बिना भाषाई विकास संभव नहीं है क्योंकि भाषा विचारों की अभिव्यक्ति का माध्यम है। संवेगात्मक परिपक्वता सीधे तौर पर बालक के आत्मविश्वास और सामाजिक संबंधों को प्रभावित करती है। विकास एक 'एकीकृत' (Integrated) प्रक्रिया है।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.15 शिक्षा मनोविज्ञान और बाल मनोविज्ञान के ऐतिहासिक एवं वैचारिक आधार पर निम्नलिखित कथनों का विश्लेषण कीजिए:

1. पेस्टालॉजी ने अपने साढ़े तीन वर्षीय पुत्र पर अध्ययन कर 'बेबी बायोग्राफी' तैयार की थी।

2. शिक्षा मनोविज्ञान एक 'आदर्शात्मक विज्ञान' (Normative Science) है जो केवल मूल्यों का अध्ययन करता है।

3. स्टेनली हॉल को 'बाल अध्ययन आंदोलन' (Child Study Movement) का जनक माना जाता है।

4. बाल विकास का क्षेत्र केवल बाल्यावस्था तक सीमित है और इसमें किशोरावस्था शामिल नहीं है।

A केवल 1 और 2 सही हैं

B केवल 1 और 3 सही हैं

C केवल 2 और 4 सही हैं

D केवल 3 और 4 सही हैं

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

सही उत्तर विकल्प B है। कथन 1 सत्य है क्योंकि पेस्टालॉजी ने 1774 में बाल विकास का प्रथम वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया था। कथन 3 भी सत्य है क्योंकि स्टेनली हॉल ने ही अमेरिका में बाल अध्ययन की नींव रखी थी। कथन 2 गलत है क्योंकि शिक्षा मनोविज्ञान एक 'धनात्मक' या 'व्यावहारिक' विज्ञान (Positive/Applied Science) है, न कि आदर्शात्मक। कथन 4 गलत है क्योंकि आधुनिक 'बाल विकास' के अंतर्गत गर्भावस्था से लेकर किशोरावस्था (Adolescence) तक के परिवर्तनों का व्यापक अध्ययन किया जाता है। शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य केंद्र 'शिक्षण-अधिगम प्रक्रिया' को प्रभावी बनाना है। बाल मनोविज्ञान बालक के व्यवहार और विकास के कारणों का वैज्ञानिक अध्ययन करता है।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.16 बाल विकास के सिद्धांतों के संबंध में निम्नलिखित कथनों का परीक्षण करें और सही कूट का चयन करें:

1. विकास सामान्य से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं की ओर अग्रसर होता है।

2. विकास एक असतत (Discontinuous) प्रक्रिया है।

3. विकास की दर में वैयक्तिक भिन्नताएं पाई जाती हैं।

4. विकास पूर्वानुमेय (Predictable) होता है।

A 1, 2 और 3 सही हैं

B 1, 3 और 4 सही हैं

C 2, 3 और 4 सही हैं

D केवल 1 और 4 सही हैं

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

सही उत्तर विकल्प B है। विकास के सिद्धांतों के अनुसार, विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है (Continuous process), जो गर्भाधान से मृत्यु तक चलती है। यह कभी नहीं रुकती, इसलिए कथन 2 गलत है। विकास हमेशा सामान्य प्रतिक्रियाओं से विशिष्ट प्रतिक्रियाओं (General to Specific) की ओर बढ़ता है; जैसे बच्चा पहले किसी वस्तु को पकड़ने के लिए पूरे शरीर का उपयोग करता है और बाद में केवल उंगलियों का। प्रत्येक बालक के विकास की दर अलग होती है, जिसे वैयक्तिक भिन्नता का सिद्धांत कहते हैं। विकास की भविष्यवाणी की जा सकती है (Predictable) क्योंकि यह एक निश्चित क्रम का पालन करता है। गलत विकल्प का कारण: कथन 2 गलत है क्योंकि विकास असतत नहीं, बल्कि सतत होता है। संबंधित तथ्य: विकास संचयी (Cumulative) होता है और इसके सभी पक्ष एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। स्मरण सूत्र: 'G-S-C-P' (General to Specific, Continuous, Predictable)।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.17 विकास की अवस्थाओं और उनकी विशेषताओं के बारे में दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:

K. शैशवावस्था को 'मिथ्या परिपक्वता' का काल कहा जाता है।

L. पूर्व-बाल्यावस्था को 'टोली-पूर्व अवस्था' (Pre-gang age) के रूप में जाना जाता है।

M. शारीरिक वृद्धि और विकास की गति शैशवावस्था में सबसे तीव्र होती है।

N. समाजीकरण की प्रक्रिया केवल किशोरावस्था से प्रारंभ होती है।

A K और L सही हैं

B L और M सही हैं

C M और N सही हैं

D K और N सही हैं

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही उत्तर विकल्प B है। पूर्व-बाल्यावस्था (2 से 6 वर्ष) को 'टोली-पूर्व अवस्था' (Pre-gang age) कहा जाता है क्योंकि इस आयु में बच्चा सामाजिक तो होता है लेकिन वह सक्रिय रूप से समूहों या टोलियों का हिस्सा नहीं बनता। शैशवावस्था में शारीरिक और मानसिक विकास की गति जीवन के अन्य चरणों की तुलना में सबसे तीव्र होती है। गलत विकल्प का कारण: कथन K गलत है क्योंकि मनोवैज्ञानिक जे.एस. रॉस ने 'बाल्यावस्था' (6-12 वर्ष) को 'मिथ्या परिपक्वता' (Pseudo-maturity) का काल कहा है। कथन N गलत है क्योंकि समाजीकरण की प्रक्रिया जन्म के तुरंत बाद परिवार से शुरू हो जाती है, यह केवल किशोरावस्था तक सीमित नहीं है। संबंधित तथ्य: शैशवावस्था को 'भावी जीवन की आधारशिला' कहा जाता है और बाल्यावस्था को 'खेल की आयु' (Game age) भी कहते हैं। स्मरण सूत्र: 'Early-Pre' (Early childhood is Pre-gang)।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.18 विकास को प्रभावित करने वाले कारकों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों की सत्यता की जांच करें:

1. आनुवंशिकता विकास की ऊपरी सीमा (Limit) निर्धारित करती है।

2. वातावरण विकास के लिए अवसर और मंच प्रदान करता है।

3. अलग-अलग वातावरण में पाले गए जुड़वां बच्चों की बुद्धि में कोई समानता नहीं होती।

4. अंत:स्रावी ग्रंथियां विकास को प्रभावित करने वाले आंतरिक कारक हैं।

A 1, 2 और 4 सही हैं

B 2, 3 और 4 सही हैं

C 1, 3 और 4 सही हैं

D सभी कथन सही हैं

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही उत्तर विकल्प A है। विकास आनुवंशिकता और वातावरण की अंत:क्रिया का परिणाम है। आनुवंशिकता (Heredity) विकास की एक सीमा तय कर देती है कि बालक का अधिकतम विकास कहाँ तक हो सकता है, जबकि वातावरण (Environment) उन संभावनाओं को साकार करने के अवसर प्रदान करता है। अंत:स्रावी ग्रंथियां जैसे थायराइड और पिट्यूटरी ग्रंथियां विकास को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण आंतरिक कारक हैं। गलत विकल्प का कारण: कथन 3 गलत है क्योंकि शोध बताते हैं कि अलग-अलग वातावरण में पाले जाने के बावजूद समान जुड़वां बच्चों (Identical twins) की बुद्धि और व्यवहार में काफी समानता होती है, जो आनुवंशिकता की प्रबलता को दर्शाता है। संबंधित तथ्य: विकास $D = H \times E$ (Heredity $\times$ Environment) का परिणाम है। पोषण का संबंध वातावरण से है। स्मरण सूत्र: 'H-Limit, E-Chance' (Heredity sets limit, Environment gives chance)।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.19 विकास के विभिन्न आयामों के अंत:संबंधों के बारे में निम्नलिखित कथनों का विश्लेषण करें:

K. संज्ञानात्मक विकास शारीरिक विकास से पूरी तरह स्वतंत्र होता है।

L. संवेगात्मक विकास परिपक्वता और अधिगम दोनों का परिणाम है।

M. भाषा का विकास संज्ञानात्मक विकास का ही एक महत्वपूर्ण आयाम है।

N. नैतिक विकास एक विशुद्ध रूप से जैविक प्रक्रिया है।

A K और L सही हैं

B L और M सही हैं

C M और N सही हैं

D K और N सही हैं

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही उत्तर विकल्प B है। विकास के सभी आयाम जैसे शारीरिक, मानसिक, सामाजिक और संवेगात्मक एक-दूसरे से गहराई से जुड़े होते हैं। यदि एक आयाम प्रभावित होता है, तो उसका असर दूसरे पर भी पड़ता है। संवेगात्मक विकास परिपक्वता (Maturation) और अधिगम (Learning) दोनों पर निर्भर करता है। भाषा का विकास संज्ञानात्मक विकास का ही एक हिस्सा है क्योंकि भाषा सोचने और समझने की प्रक्रिया से जुड़ी है। गलत विकल्प का कारण: कथन K गलत है क्योंकि संज्ञानात्मक विकास शारीरिक स्वास्थ्य से प्रभावित होता है। कथन N गलत है क्योंकि नैतिक विकास केवल जैविक नहीं है, बल्कि यह सामाजिक अनुभवों और तर्कशक्ति पर आधारित होता है। संबंधित तथ्य: संवेग और संज्ञान एक-दूसरे में सन्निहित (Interwoven) हैं और विकास एक एकीकृत (Integrated) प्रक्रिया है। स्मरण सूत्र: 'I-D-A' (Inter-Dependent Dimensions)।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.20 शिक्षा मनोविज्ञान के ऐतिहासिक विकास और परिभाषाओं के संबंध में सही कथनों की पहचान करें:

1. विलियम जेम्स को 'अमेरिकी मनोविज्ञान का जनक' माना जाता है।

2. 'सूक्ष्म शिक्षण' (Micro-teaching) की तकनीक बी.एफ. स्किनर द्वारा विकसित की गई थी।

3. जे.बी. वाटसन ने मनोविज्ञान को 'व्यवहार का विज्ञान' परिभाषित किया है।

4. शिक्षा मनोविज्ञान एक नियामक (Normative) विज्ञान की श्रेणी में आता है।

A 1, 2 और 3 सही हैं

B 2, 3 और 4 सही हैं

C 1 और 3 सही हैं

D 1 और 4 सही हैं

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही उत्तर विकल्प C है। विलियम जेम्स को 'अमेरिकी मनोविज्ञान का जनक' माना जाता है, जिन्होंने 'Principles of Psychology' पुस्तक लिखी थी। जे.बी. वाटसन ने मनोविज्ञान को 'व्यवहार का शुद्ध विज्ञान' मानकर व्यवहारवाद की नींव रखी थी। गलत विकल्प का कारण: कथन 2 गलत है क्योंकि 'सूक्ष्म शिक्षण' (Micro-teaching) का विकास ड्वाइट डब्ल्यू. एलन ने स्टैनफोर्ड विश्वविद्यालय में किया था, न कि स्किनर ने। कथन 4 गलत है क्योंकि शिक्षा मनोविज्ञान एक 'धनात्मक' (Positive) या 'अनुप्रयुक्त' (Applied) विज्ञान है। यह 'क्या है' का अध्ययन करता है, जबकि 'नियामक' (Normative) विज्ञान 'क्या होना चाहिए' (जैसे नीतिशास्त्र) पर केंद्रित होते हैं। संबंधित तथ्य: थार्नडाइक को प्रथम शैक्षिक मनोवैज्ञानिक कहा जाता है। मनोविज्ञान पहले दर्शनशास्त्र की एक शाखा था। स्मरण सूत्र: 'James-Am' (William James - American)।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.21 बाल विकास के सिद्धांतों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों का परीक्षण करें और सही कूट का चयन करें:

1. विकास एक सतत प्रक्रिया है जो गर्भाधान से लेकर मृत्यु पर्यंत चलती रहती है।

2. विकास की दर सभी बालकों में एक समान और स्थिर होती है।

3. विकास हमेशा सामान्य क्रियाओं से विशिष्ट क्रियाओं की ओर अग्रसर होता है।

4. विकास के सभी आयाम (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक) एक-दूसरे से पूर्णतः स्वतंत्र होते हैं।

A केवल 1 और 2 सत्य हैं

B केवल 1 और 3 सत्य हैं

C 1, 2 और 3 सत्य हैं

D सभी कथन सत्य हैं

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

बाल विकास के सिद्धांतों के अनुसार, विकास एक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है (कथन 1 सत्य)। विकास 'सामान्य से विशिष्ट' की ओर होता है, जैसे बच्चा पहले पूरे हाथ को हिलाता है फिर उंगलियों का प्रयोग सीखता है (कथन 3 सत्य)। कथन 2 गलत है क्योंकि 'वैयक्तिक भिन्नता' के सिद्धांत के अनुसार प्रत्येक बालक के विकास की दर भिन्न होती है। कथन 4 भी गलत है क्योंकि विकास के सभी आयाम 'परस्पर संबंधित' होते हैं; एक क्षेत्र का विकास दूसरे को प्रभावित करता है। उदाहरण के लिए, शारीरिक रूप से अस्वस्थ बच्चा मानसिक रूप से भी पिछड़ सकता है। अतः केवल 1 और 3 सही हैं।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.22 विकास की अवस्थाओं और उनकी विशेषताओं के संबंध में दिए गए कथनों पर विचार कीजिए:

K. वैलेंटाइन ने शैशवावस्था को 'सीखने का आदर्श काल' माना है।

L. रॉस ने बाल्यावस्था को 'मिथ्या परिपक्वता का काल' (Pseudo-maturity) कहा है।

M. उत्तर बाल्यावस्था (6-12 वर्ष) को 'टोली या समूह की आयु' (Gang Age) कहा जाता है।

N. किशोरावस्था में बालक में 'स्व-प्रेम' (Narcissism) की भावना पूरी तरह समाप्त हो जाती है।

A K, L, M और N सभी सत्य हैं

B केवल K और L सत्य हैं

C केवल K, L और M सत्य हैं

D केवल M और N सत्य हैं

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
शैशवावस्था सीखने की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, इसलिए वैलेंटाइन ने इसे 'आदर्श काल' कहा है (K सत्य)। बाल्यावस्था में बालक बड़ों की तरह व्यवहार करने की कोशिश करता है पर परिपक्व नहीं होता, इसलिए रॉस ने इसे 'मिथ्या परिपक्वता' कहा (L सत्य)। इस अवस्था में बालक समूहों में रहना शुरू करता है, अतः इसे 'गैंग एज' कहते हैं (M सत्य)। कथन N गलत है क्योंकि किशोरावस्था में 'स्व-प्रेम' या नार्सिसिज्म की भावना प्रबल होती है, समाप्त नहीं होती। किशोर अपने रूप-रंग और व्यक्तित्व के प्रति अत्यधिक सजग रहते हैं। अतः विकल्प C सही है।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.23 वंशानुक्रम (Heredity) के नियमों के संदर्भ में निम्नलिखित कथनों की सत्यता की जांच करें:

1. बीजकोष की निरंतरता का नियम (Law of Continuity of Germ-plasm) बीजमैन द्वारा दिया गया था।

2. प्रत्यागमन का नियम (Law of Regression) यह बताता है कि प्रतिभाशाली माता-पिता की संतानें हमेशा प्रतिभाशाली ही होती हैं।

3. अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम लैमार्क के विकासवादी सिद्धांतों से संबंधित है।

4. मेंडल के प्रयोगों के अनुसार, संकर प्रजातियों में प्रभावी गुण ही दिखाई देते हैं।

A 1, 2 और 4 सत्य हैं

B केवल 1 और 3 सत्य हैं

C 1, 3 और 4 सत्य हैं

D सभी कथन सत्य हैं

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
बीजमैन ने बताया कि बीजकोष कभी नष्ट नहीं होता और पीढ़ी दर पीढ़ी चलता रहता है (1 सत्य)। लैमार्क ने जिराफ का उदाहरण देकर अर्जित गुणों के हस्तांतरण की बात कही थी (3 सत्य)। मेंडल के प्रभाविता के नियम के अनुसार, पहली पीढ़ी में केवल प्रभावी लक्षण ही प्रकट होते हैं (4 सत्य)। कथन 2 गलत है क्योंकि 'प्रत्यागमन का नियम' कहता है कि बच्चे अक्सर अपने माता-पिता के विशिष्ट गुणों के विपरीत (औसत की ओर) लक्षण प्रदर्शित करते हैं, जैसे प्रतिभाशाली माता-पिता की संतान का कम बुद्धिमान होना। अतः 1, 3 और 4 सही हैं।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.24 विकास के आयामों और प्रभावित करने वाले कारकों के संबंध में सही युग्मों की पहचान करें:

K. गत्यात्मक विकास (Motor Development) का संबंध मांसपेशियों और तंत्रिका तंत्र के नियंत्रण से है।

L. संवेगात्मक विकास पर केवल आनुवंशिकता का प्रभाव पड़ता है, वातावरण का नहीं।

M. अंतःस्रावी ग्रंथियां (Endocrine Glands) बालक के शारीरिक और मानसिक विकास को प्रभावित करती हैं।

N. सामाजिक विकास का मुख्य आधार 'परिपक्वता' और 'अधिगम' की अंतःक्रिया है।

A केवल K, M और N सत्य हैं

B केवल K और L सत्य हैं

C L, M और N सत्य हैं

D सभी कथन सत्य हैं

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

गत्यात्मक विकास शरीर के अंगों के संचालन और समन्वय से जुड़ा है (K सत्य)। अंतःस्रावी ग्रंथियों से निकलने वाले हार्मोन (जैसे थायरोक्सिन) विकास को गहराई से प्रभावित करते हैं (M सत्य)। सामाजिक विकास परिपक्वता और सीखने के अनुभवों का परिणाम है (N सत्य)। कथन L गलत है क्योंकि संवेगात्मक विकास आनुवंशिकता और वातावरण दोनों से प्रभावित होता है। भय, क्रोध और प्रेम जैसे संवेगों की अभिव्यक्ति वातावरण और परवरिश पर निर्भर करती है। विकास हमेशा $D = HtimesE$ के सिद्धांत का पालन करता है। अतः विकल्प A सही उत्तर है।

पैटर्न: True/False & Pairing

प्र.25 शिक्षा मनोविज्ञान की विधियों और प्रकृति के बारे में निम्नलिखित कथनों का विश्लेषण करें:

1. अंतर्दर्शन विधि (Introspection) को मनोविज्ञान की सबसे वैज्ञानिक और वस्तुनिष्ठ विधि माना जाता है।

2. प्रयोगात्मक विधि (Experimental Method) के प्रवर्तक विलियम वुंट हैं, जिन्होंने पहली प्रयोगशाला स्थापित की।

3. केस स्टडी (Case Study) विधि का प्रयोग मुख्य रूप से समस्यात्मक बालकों के नैदानिक अध्ययन के लिए किया जाता है।

4. शिक्षा मनोविज्ञान एक 'धनात्मक विज्ञान' (Positive Science) है जो व्यवहार का अध्ययन करता है।

A 1, 2 और 3 सत्य हैं

B केवल 2 और 4 सत्य हैं

C 2, 3 और 4 सत्य हैं

D सभी कथन सत्य हैं

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

विलियम वुंट ने 1879 में लिपज़िग में पहली मनोविज्ञान प्रयोगशाला खोली और प्रयोगात्मक विधि को बढ़ावा दिया (2 सत्य)। केस स्टडी विधि किसी व्यक्ति के इतिहास और व्यवहार के गहन विश्लेषण के लिए सर्वोत्तम है (3 सत्य)। शिक्षा मनोविज्ञान तथ्यों पर आधारित होने के कारण एक धनात्मक विज्ञान है (4 सत्य)। कथन 1 गलत है क्योंकि अंतर्दर्शन विधि सबसे 'प्राचीन' तो है, लेकिन यह 'आत्मनिष्ठ' (Subjective) है, वस्तुनिष्ठ नहीं। इसमें व्यक्ति स्वयं के मन का निरीक्षण करता है, जिससे पक्षपात की संभावना रहती है। अतः 2, 3 और 4 सही हैं।

पैटर्न: Match the Following

प्र.26 शिक्षा मनोविज्ञान के प्रमुख विचारकों और उनकी अवधारणाओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (मनोवैज्ञानिक)	सूची-II (अवधारणा/कार्य)
1. बी. एफ. स्किनर	a. जन्म से वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का वर्णन
2. क्रो एवं क्रो	b. 'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी' के माध्यम से मनोविज्ञान को स्वतंत्र पहचान दी
3. पेस्टालॉजी	c. शिक्षा मनोविज्ञान शिक्षण और अधिगम से संबंधित है
4. विलियम जेम्स	d. बाल विकास का प्रथम वैज्ञानिक विवरण (बेबी बायोग्राफी) प्रस्तुत किया

A 1-c, 2-a, 3-d, 4-b

B 1-a, 2-c, 3-b, 4-d

C 1-d, 2-b, 3-a, 4-c

D 1-b, 2-d, 3-c, 4-a

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही सुमेलित विकल्प 'A' है। स्किनर के अनुसार, शिक्षा मनोविज्ञान मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण और अधिगम से संबंधित है। क्रो एवं क्रो ने शिक्षा मनोविज्ञान को व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का योग माना है। पेस्टालॉजी ने 1774 में अपने ही 3.5 वर्षीय पुत्र पर अध्ययन कर बाल विकास का प्रथम वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया था। विलियम जेम्स ने 1890 में 'प्रिंसिपल्स ऑफ साइकोलॉजी' पुस्तक लिखकर मनोविज्ञान को दर्शनशास्त्र से अलग कर एक स्वतंत्र विज्ञान के रूप में स्थापित किया। अन्य विकल्प इन विचारकों के विशिष्ट योगदानों को गलत तरीके से जोड़ते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- स्किनर: क्रिया प्रसूत अनुबंधन सिद्धांत के प्रतिपादक।
- विलियम जेम्स: अमेरिकी मनोविज्ञान के जनक।

पैटर्न: Match the Following

प्र.27 बाल विकास के सिद्धांतों और उनके अर्थ के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (सिद्धांत)	सूची-II (अर्थ)
1. निरंतरता का सिद्धांत	a. बालक पहले पूरे अंग को, फिर उसके भागों को चलाना सीखता है
2. व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत	b. विकास एक कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है जो गर्भ से मृत्यु तक चलती है
3. एकीकरण का सिद्धांत	c. विकास के शारीरिक, मानसिक और सामाजिक पक्ष एक-दूसरे पर आश्रित हैं
4. परस्पर संबंध का सिद्धांत	d. प्रत्येक बालक की विकास की दर और स्वरूप भिन्न-भिन्न होता है

A 1-a, 2-c, 3-d, 4-b

B 1-b, 2-d, 3-a, 4-c

C 1-c, 2-b, 3-a, 4-d

D 1-d, 2-a, 3-b, 4-c

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही सुमेलित विकल्प 'B' है। निरंतरता का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि विकास एक सतत प्रक्रिया है जो 'विराम' नहीं लेती। व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत बताता है कि आनुवंशिकता और वातावरण के प्रभाव के कारण दो बालकों के विकास की गति एक समान नहीं हो सकती। एकीकरण का सिद्धांत (Principle of Integration) यह दर्शाता है कि बालक पहले सामान्य अंगों का प्रयोग करता है और फिर विशिष्ट अंगों का समन्वय करना सीखता है। परस्पर संबंध का सिद्धांत यह सिद्ध करता है कि विकास के सभी आयाम (शारीरिक, संज्ञानात्मक, संवेगात्मक) एक-दूसरे से गहराई से जुड़े होते हैं। अन्य विकल्प इन सिद्धांतों की परिभाषाओं को गलत तरीके से प्रस्तुत करते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- विकास की गति कभी तीव्र तो कभी मंद हो सकती है।
- विकास एक व्यवस्थित और पूर्वानुमेय क्रम का पालन करता है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.28 विकास की अवस्थाओं और उनकी विशिष्ट मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (अवस्था)	सूची-II (विशेषता)
1. शैशवावस्था	a. पहचान का संकट (Identity Crisis) और संवेगात्मक अस्थिरता
2. पूर्व बाल्यावस्था	b. टोली पूर्व की अवस्था (Pre-gang age) और अनुकरण की प्रवृत्ति
3. उत्तर बाल्यावस्था	c. मिथ्या परिपक्वता का काल (Pseudo-maturity) और संग्रह की प्रवृत्ति
4. किशोरावस्था	d. स्व-प्रेम की भावना (Narcissism) और मूल प्रवृत्त्यात्मक व्यवहार

A 1-b, 2-d, 3-a, 4-c

B 1-c, 2-a, 3-b, 4-d

C 1-d, 2-b, 3-c, 4-a

D 1-a, 2-c, 3-d, 4-b

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही सुमेलित विकल्प 'C' है। शैशवावस्था ($0-5$ वर्ष) में बालक में 'नार्सिसिज्म' या स्व-प्रेम की भावना प्रबल होती है। पूर्व बाल्यावस्था ($2-6$ वर्ष) को 'Pre-gang age' कहा जाता है क्योंकि इसमें बच्चा समूह में शामिल होने की तैयारी करता है। उत्तर बाल्यावस्था ($6-12$ वर्ष) को मनोवैज्ञानिक रॉस ने 'मिथ्या परिपक्वता' का काल कहा है क्योंकि इस दौरान बालक बड़ों की तरह व्यवहार करने का प्रयास करता है। किशोरावस्था ($12-18$ वर्ष) को एरिक एरिक्सन ने 'पहचान के संकट' की अवस्था माना है, जहाँ किशोर अपने अस्तित्व की खोज करता है। अन्य विकल्प इन अवस्थाओं के विशिष्ट लक्षणों को गलत क्रम में दर्शाते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- शैशवावस्था: सीखने का आदर्श काल (वैलेंटाइन)।
- किशोरावस्था: तनाव और तूफान की अवस्था (स्टेनली हॉल)।

पैटर्न: Match the Following

प्र.29 विकास को प्रभावित करने वाले कारकों और उनके प्रकारों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (कारक)	सूची-II (प्रकार)
1. अंत:स्रावी ग्रंथियां	a. प्राथमिक समाजीकरण का मुख्य कारक
2. पोषण एवं आहार	b. विकास का आंतरिक/जैविक कारक
3. परिवार	c. द्वितीयक समाजीकरण का बाह्य कारक
4. मित्र मंडली एवं विद्यालय	d. शारीरिक वृद्धि को प्रभावित करने वाला बाह्य कारक

A 1-b, 2-d, 3-a, 4-c

B 1-d, 2-b, 3-c, 4-a

C 1-a, 2-c, 3-d, 4-b

D 1-c, 2-a, 3-b, 4-d

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही सुमेलित विकल्प 'A' है। अंत:स्रावी ग्रंथियां (जैसे पीयूष ग्रंथि) हार्मोन स्रावित करती हैं जो विकास के आंतरिक या जैविक आधार का निर्माण करती हैं। पोषण एक महत्वपूर्ण बाह्य कारक है जो बालक की शारीरिक वृद्धि और स्वास्थ्य की गुणवत्ता निर्धारित करता है। परिवार बालक के समाजीकरण की प्रथम पाठशाला है, इसलिए इसे प्राथमिक समाजीकरण का कारक माना जाता है। मित्र मंडली और विद्यालय बालक के सामाजिक दायरे का विस्तार करते हैं, जो द्वितीयक समाजीकरण के अंतर्गत आते हैं। अन्य विकल्प इन कारकों के प्रभाव क्षेत्र को सही ढंग से वर्गीकृत नहीं करते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- वंशानुक्रम को 'स्थिर' सामाजिक संरचना माना जाता है।
- वातावरण को 'गत्यात्मक' कारक माना जाता है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.30 विकास के विभिन्न आयामों और उनमें होने वाले परिवर्तनों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (विकास के आयाम)	सूची-II (परिवर्तन का स्वरूप)
1. शारीरिक विकास	a. संवेगों पर नियंत्रण और सहानुभूति का विकास
2. संज्ञानात्मक विकास	b. नैतिक मूल्यों और सामाजिक मानदंडों का अर्जन
3. संवेगात्मक विकास	c. गत्यात्मक कौशल (Motor Skills) और कार्यक्षमता में वृद्धि
4. सामाजिक विकास	d. तर्क, चिंतन, स्मृति और भाषा का विकास

A 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

B 1-c, 2-d, 3-a, 4-b

C 1-d, 2-a, 3-b, 4-c

D 1-b, 2-c, 3-d, 4-a

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही सुमेलित विकल्प 'B' है। शारीरिक विकास का सीधा संबंध शरीर के अंगों की वृद्धि और गत्यात्मक कौशलों (जैसे सूक्ष्म और स्थूल क्रियाएं) से है। संज्ञानात्मक विकास (Cognitive Development) में मानसिक शक्तियों जैसे तर्क करना, समस्या समाधान और भाषा का विकास शामिल है। संवेगात्मक विकास का अर्थ है अपने और दूसरों के संवेगों (भय, क्रोध, प्रेम) को समझना और उन पर नियंत्रण पाना। सामाजिक विकास के अंतर्गत बालक समाज के नियमों को सीखता है और नैतिक आचरण करना शुरू करता है। अन्य विकल्प इन आयामों के कार्यक्षेत्रों को गलत तरीके से परिभाषित करते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- विकास बहुआयामी (Multidimensional) होता है।
- संज्ञानात्मक विकास का सिद्धांत जीन पियाजे ने दिया था।

पैटर्न: Match the Following

प्र.31 शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाओं और उनके विचारकों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (मनोवैज्ञानिक)	सूची-II (परिभाषा/योगदान)
1. पेस्टालॉजी	a. शिक्षा मनोविज्ञान, सीखने और सिखाने की प्रक्रिया का अध्ययन है।
2. स्किनर	b. बालक के विकास का प्रथम वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया।
3. क्रो एवं क्रो	c. मनोविज्ञान वातावरण के संपर्क में होने वाले मानव व्यवहारों का अध्ययन है।
4. वुडवर्थ	d. शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के अनुभवों का वर्णन है।

A 1-b, 2-a, 3-d, 4-c

B 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

C 1-c, 2-d, 3-a, 4-b

D 1-d, 2-c, 3-b, 4-a

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में विभिन्न मनोवैज्ञानिकों ने महत्वपूर्ण योगदान दिया है। पेस्टालॉजी ने 1774 में अपने साढ़े तीन वर्षीय पुत्र पर अध्ययन कर बाल विकास का प्रथम वैज्ञानिक विवरण प्रस्तुत किया था। बी.एफ. स्किनर के अनुसार, शिक्षा मनोविज्ञान वह शाखा है जो शिक्षण और अधिगम (सीखने) से संबंधित है। क्रो एवं क्रो ने शिक्षा मनोविज्ञान को जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का विज्ञान माना है। वुडवर्थ ने मनोविज्ञान को वातावरण के संदर्भ में व्यक्ति की गतिविधियों का वैज्ञानिक अध्ययन बताया है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि वे इन परिभाषाओं का सही मिलान नहीं करते हैं।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- पेस्टालॉजी को बाल मनोविज्ञान का वैज्ञानिक आधार तैयार करने का श्रेय जाता है।
- स्किनर ने क्रिया प्रसूत अनुबंधन का सिद्धांत भी दिया था।

पैटर्न: Match the Following

प्र.32 बाल विकास के प्रमुख सिद्धांतों और उनके अर्थ के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (सिद्धांत)	सूची-II (व्याख्या)
1. निरंतरता का सिद्धांत	a. विकास सामान्य से विशिष्ट क्रियाओं की ओर बढ़ता है।
2. एकीकरण का सिद्धांत	b. विकास की प्रक्रिया कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है।
3. परस्पर संबंध का सिद्धांत	c. बालक पहले पूरे हाथ को, फिर उंगलियों को चलाना सीखता है।
4. सामान्य से विशिष्ट का सिद्धांत	d. शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास एक-दूसरे पर निर्भर हैं।

A 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

B 1-b, 2-c, 3-d, 4-a

C 1-c, 2-d, 3-a, 4-b

D 1-d, 2-a, 3-b, 4-c

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

बाल विकास के सिद्धांत विकास की प्रकृति को समझने में मदद करते हैं। निरंतरता का सिद्धांत बताता है कि विकास गर्भावस्था से मृत्यु तक निरंतर चलता रहता है। एकीकरण के सिद्धांत के अनुसार, बालक पहले संपूर्ण अंग को और फिर उसके भागों को चलाना सीखता है, जैसे पहले हाथ फिर उंगलियां। परस्पर संबंध का सिद्धांत यह स्पष्ट करता है कि विकास के सभी आयाम (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक) एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं। सामान्य से विशिष्ट का सिद्धांत कहता है कि बालक पहले सामान्य प्रतिक्रियाएं करता है और बाद में विशिष्ट कौशल सीखता है। विकल्प B इन सभी का सही मिलान प्रस्तुत करता है।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- विकास एक क्रमिक प्रक्रिया है जो एक निश्चित प्रतिमान का अनुसरण करती है।
- विकास की गति अलग-अलग बालकों में भिन्न हो सकती है (वैयक्तिक भिन्नता)।

पैटर्न: Match the Following

प्र.33 विकास की अवस्थाओं और उनके उपनामों/विशेषताओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (अवस्था)	सूची-II (उपनाम/विशेषता)
1. शैशवावस्था	a. टोली पूर्व की अवस्था (Pre-gang age)
2. पूर्व बाल्यावस्था	b. तार्किक चिंतन की अवस्था
3. उत्तर बाल्यावस्था	c. क्षणिक संवेगों की अवस्था
4. किशोरावस्था	d. जीवन का सबसे कठिन काल

A 1-b, 2-a, 3-d, 4-c

B 1-c, 2-a, 3-b, 4-d

C 1-a, 2-c, 3-d, 4-b

D 1-d, 2-b, 3-c, 4-a

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

विकास की प्रत्येक अवस्था की अपनी विशिष्ट मनोवैज्ञानिक विशेषताएं होती हैं। शैशवावस्था को क्षणिक संवेगों की अवस्था कहा जाता है क्योंकि इसमें शिशु के संवेग तीव्र लेकिन अस्थाई होते हैं। पूर्व बाल्यावस्था ($2-6$ वर्ष) को 'टोली पूर्व की अवस्था' या 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है। उत्तर बाल्यावस्था ($6-12$ वर्ष) में बालक में तार्किक चिंतन का उदय होता है और वह समूह या टोली में रहना पसंद करता है। किशोरावस्था को 'जीवन का सबसे कठिन काल' (किलपैट्रिक के अनुसार) और 'तनाव एवं तूफान की अवस्था' कहा जाता है। विकल्प B सही क्रम दर्शाता है।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- बाल्यावस्था को 'छद्म परिपक्वता का काल' (Pseudo-maturity) भी कहा जाता है।
- किशोरावस्था में आत्म-पहचान का संकट (Identity Crisis) प्रमुख होता है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.34 विकास के आयामों और उनसे संबंधित परिवर्तनों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (विकास के आयाम)	सूची-II (संबंधित परिवर्तन)
1. संज्ञानात्मक विकास	a. नैतिकता और मूल्यों का विकास
2. सामाजिक विकास	b. भाषा, स्मृति और तर्कशक्ति का विकास
3. संवेगात्मक विकास	c. सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुसार व्यवहार
4. नैतिक विकास	d. भय, क्रोध और प्रेम जैसे भावों का प्रबंधन

A 1-b, 2-c, 3-d, 4-a

B 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

C 1-c, 2-d, 3-a, 4-b

D 1-d, 2-a, 3-b, 4-c

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

विकास एक बहुआयामी प्रक्रिया है। संज्ञानात्मक विकास का संबंध मानसिक क्षमताओं जैसे भाषा, स्मृति, समस्या समाधान और तर्कशक्ति से है। सामाजिक विकास का अर्थ है समाज के नियमों को सीखना और सामाजिक प्रत्याशाओं के अनुरूप व्यवहार करना। संवेगात्मक विकास के अंतर्गत बालक अपने भावों जैसे भय, क्रोध और प्रेम को पहचानना और नियंत्रित करना सीखता है। नैतिक विकास का संबंध सही और गलत के बीच अंतर करने और नैतिक मूल्यों को अपनाने से है। विकल्प A इन आयामों का उनके सही परिवर्तनों के साथ सटीक मिलान करता है।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- जीन पियाजे संज्ञानात्मक विकास के प्रमुख सिद्धांतकार हैं।
- कोहलबर्ग ने नैतिक विकास की अवस्थाओं का प्रतिपादन किया था।

पैटर्न: Match the Following

प्र.35 वंशानुक्रम और वातावरण के सिद्धांतों/कारकों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (सिद्धांत/कारक)	सूची-II (प्रतिपादक/प्रकृति)
1. बीजकोष की निरंतरता का नियम	a. ग्रेगर जॉन मेंडल
2. अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम	b. बीजमैन
3. वंशानुक्रम के मौलिक नियम	c. लैमार्क
4. वातावरण	d. सामाजिक विरासत

A 1-c, 2-d, 3-a, 4-b

B 1-b, 2-c, 3-a, 4-d

C 1-a, 2-b, 3-d, 4-c

D 1-d, 2-a, 3-c, 4-b

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

बाल विकास वंशानुक्रम और वातावरण की अंतःक्रिया का परिणाम है। बीजकोष की निरंतरता का नियम बीजमैन ने दिया था, जिसके अनुसार जनन द्रव्य कभी नष्ट नहीं होता। अर्जित गुणों के संक्रमण का नियम लैमार्क ने दिया था (जिराफ का उदाहरण)। वंशानुक्रम के मौलिक नियमों (प्रभाविता, पृथक्करण) का प्रतिपादन ग्रेगर जॉन मेंडल ने मटर के पौधों पर प्रयोग करके किया था। वातावरण को 'सामाजिक विरासत' या 'बाहरी शक्ति' माना जाता है जो व्यक्ति को प्रभावित करती है। विकल्प B इन सभी का सही मिलान प्रस्तुत करता है।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- वुडवर्थ के अनुसार, व्यक्ति का विकास वंशानुक्रम और वातावरण का योग नहीं बल्कि गुणनफल है।
- मेंडल को 'आनुवंशिकी का जनक' कहा जाता है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.36 शिक्षा मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान देने वाले मनोवैज्ञानिकों और उनके प्रमुख कार्यों/पुस्तकों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और सही कूट का चयन कीजिए:

सूची-I	सूची-II
1. विलियम जेम्स	a. प्रथम वैज्ञानिक बाल अध्ययन (बेबी बायोग्राफी)
2. जे.एम. कैटेल	b. टॉक टू टीचर्स (Talk to Teachers)
3. स्टेनली हॉल	c. मानसिक परीक्षण एवं मापन (Mental Tests)
4. पेस्टालॉजी	d. बाल अध्ययन आंदोलन के जनक

A 1-b, 2-c, 3-d, 4-a

B 1-c, 2-b, 3-a, 4-d

C 1-b, 2-a, 3-d, 4-c

D 1-d, 2-c, 3-b, 4-a

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही सुमेल इस प्रकार है: विलियम जेम्स ने 1899 में 'टॉक टू टीचर्स' पुस्तक लिखी, जिसने शिक्षा मनोविज्ञान के व्यावहारिक पक्ष को मजबूत किया। जे.एम. कैटेल ने 1890 में 'मानसिक परीक्षण' (Mental Tests) शब्द का सर्वप्रथम प्रयोग किया। स्टेनली हॉल को 'बाल अध्ययन आंदोलन' का जनक और किशोरावस्था के मनोविज्ञान का विशेषज्ञ माना जाता है। पेस्टालॉजी ने 1774 में अपने साढ़े तीन वर्षीय पुत्र पर किए गए प्रेक्षणों के आधार पर प्रथम वैज्ञानिक 'बेबी बायोग्राफी' तैयार की थी। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि वे इन मनोवैज्ञानिकों के कार्यों का सही मिलान नहीं करते हैं। याद रखने के लिए: 'जेम्स' ने 'टीचर्स' से बात की और 'कैटेल' ने 'टेस्ट' लिया।

पैटर्न: Match the Following

प्र.37 बाल विकास के प्रमुख सिद्धांतों और उनके अर्थ के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
1. एकीकरण का सिद्धांत	a. विकास की गति सभी बालकों में एक समान अनुक्रम का पालन करती है
2. परस्पर संबंध का सिद्धांत	b. विकास गर्भावस्था से मृत्यु तक निरंतर चलने वाली प्रक्रिया है
3. समान प्रतिमान का सिद्धांत	c. शारीरिक, मानसिक और संवेगात्मक विकास एक-दूसरे को प्रभावित करते हैं
4. निरंतरता का सिद्धांत	d. बालक पहले संपूर्ण अंग को और फिर उसके भागों को चलाना सीखता है

A 1-d, 2-a, 3-c, 4-b

B 1-d, 2-c, 3-a, 4-b

C 1-b, 2-c, 3-a, 4-d

D 1-c, 2-d, 3-b, 4-a

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही मिलान इस प्रकार है: एकीकरण के सिद्धांत (Principle of Integration) के अनुसार बालक पहले पूरे हाथ को, फिर उंगलियों को और फिर दोनों को एक साथ चलाना सीखता है। परस्पर संबंध का सिद्धांत बताता है कि विकास के सभी आयाम (शारीरिक, मानसिक, सामाजिक) एक-दूसरे से जुड़े होते हैं। समान प्रतिमान का सिद्धांत (Uniform Pattern) यह स्पष्ट करता है कि एक ही जाति के जीवों के विकास का क्रम एक जैसा होता है। निरंतरता का सिद्धांत कहता है कि विकास कभी न रुकने वाली प्रक्रिया है। विकल्प B इन सभी का सही मिलान प्रस्तुत करता है। विकास एक क्रमिक और व्यवस्थित प्रक्रिया है जो 'विशिष्ट से सामान्य' की ओर नहीं बल्कि 'सामान्य से विशिष्ट' की ओर चलती है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.38 विकास की विभिन्न अवस्थाओं और उनकी प्रमुख मनोवैज्ञानिक विशेषताओं के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
1. शैशवावस्था	a. टोली की आयु (Gang Age) एवं समाजीकरण
2. पूर्व बाल्यावस्था	b. पहचान का संकट (Identity vs Role Confusion)
3. उत्तर बाल्यावस्था	c. इंद्रियजनित अधिगम और तीव्र शारीरिक वृद्धि
4. किशोरावस्था	d. भाषाई विकास का संवेदनशील काल और खिलौनों की आयु

A 1-c, 2-a, 3-d, 4-b

B 1-d, 2-c, 3-a, 4-b

C 1-c, 2-d, 3-a, 4-b

D 1-b, 2-d, 3-a, 4-c

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

शैशवावस्था (0-2 वर्ष) में बालक अपनी इंद्रियों के माध्यम से सीखता है और शारीरिक वृद्धि अत्यंत तीव्र होती है। पूर्व बाल्यावस्था (2-6 वर्ष) को 'खिलौनों की आयु' कहा जाता है और यह भाषा सीखने का सबसे महत्वपूर्ण समय है। उत्तर बाल्यावस्था (6-12 वर्ष) में बालक समूह या टोली बनाना शुरू करता है, जिसे 'गैंग एज' कहते हैं। किशोरावस्था (12-18 वर्ष) में एरिक एरिक्सन के अनुसार 'पहचान का संकट' उत्पन्न होता है। विकल्प C इन सभी अवस्थाओं का उनकी विशेषताओं के साथ सटीक मिलान करता है। अन्य विकल्प इन अवस्थाओं के कालक्रम और विशेषताओं को गलत तरीके से जोड़ते हैं। याद रखें: 'शैशव' में इंद्रियाँ, 'पूर्व बाल्य' में खिलौने, 'उत्तर बाल्य' में टोली और 'किशोर' में पहचान महत्वपूर्ण है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.39 विकास को प्रभावित करने वाले कारकों और उनसे संबंधित विचारकों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
1. यूरी ब्रोनफेनब्रेनर	a. वंशानुक्रम के नियम (मटर के पौधों पर प्रयोग)
2. फ्रांसिस गाल्टन	b. पारिस्थितिकी तंत्र सिद्धांत (Ecological Systems Theory)
3. ग्रेगर मेंडल	c. सुजननिकी (Eugenics) और 'हेरेडिटरी जीनियस'
4. जे.बी. वॉटसन	d. वातावरणवाद (व्यवहारवाद)

A 1-b, 2-c, 3-a, 4-d

B 1-c, 2-b, 3-d, 4-a

C 1-b, 2-a, 3-c, 4-d

D 1-d, 2-c, 3-a, 4-b

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

ब्रोनफेनब्रेनर ने पारिस्थितिकी तंत्र सिद्धांत दिया, जिसमें माइक्रोसिस्टम और मैक्रोसिस्टम जैसे स्तर बताए गए हैं। फ्रांसिस गाल्टन ने 'हेरेडिटरी जीनियस' पुस्तक लिखी और व्यक्तिगत भिन्नता व सुजननिकी पर कार्य किया। ग्रेगर मेंडल को 'आनुवंशिकी का जनक' कहा जाता है, जिन्होंने मटर के पौधों पर प्रयोग कर वंशानुक्रम के नियम दिए। जे.बी. वॉटसन ने वातावरण के प्रभाव पर जोर देते हुए कहा था कि 'मुझे कोई भी बच्चा दो, मैं उसे कुछ भी बना सकता हूँ'। विकल्प A इन सभी का सही मिलान है। विकास वास्तव में वंशानुक्रम और वातावरण का गुणनफल है, जिसे सूत्र रूप में $D = HtimesE$ लिखा जाता है। यहाँ D विकास, H वंशानुक्रम और E वातावरण को दर्शाता है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.40 विकास के विभिन्न आयामों और उनमें होने वाले परिवर्तनों के उदाहरणों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
1. संज्ञानात्मक विकास	a. नैतिक मूल्यों और सही-गलत का बोध
2. संवेगात्मक विकास	b. समस्या समाधान, स्मृति और तर्क शक्ति
3. सामाजिक विकास	c. आत्म-नियंत्रण और सहानुभूति का भाव
4. नैतिक विकास	d. सहयोग, नेतृत्व और समूह समायोजन

A 1-b, 2-c, 3-d, 4-a

B 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

C 1-b, 2-d, 3-c, 4-a

D 1-c, 2-b, 3-a, 4-d

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

संज्ञानात्मक विकास का संबंध मस्तिष्क की क्षमताओं जैसे सोचने, याद रखने और निर्णय लेने से है। संवेगात्मक विकास का अर्थ है अपने और दूसरों के संवेगों को समझना और उन पर नियंत्रण पाना। सामाजिक विकास बालक की समाज में अंत:क्रिया, सहयोग और समायोजन की क्षमता को दर्शाता है। नैतिक विकास का संबंध चरित्र निर्माण और समाज द्वारा स्वीकृत नियमों के पालन से है। विकल्प A इन आयामों का उनके सही उदाहरणों के साथ मिलान करता है। विकास के ये सभी आयाम एक-दूसरे पर निर्भर करते हैं; यदि एक आयाम (जैसे शारीरिक स्वास्थ्य) प्रभावित होता है, तो अन्य आयाम (जैसे संज्ञानात्मक या सामाजिक) भी प्रभावित हो सकते हैं। इसे 'विकास का अंत:संबंध सिद्धांत' कहा जाता है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.41 शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाओं और उनके संबंधित मनोवैज्ञानिकों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए और नीचे दिए गए कूट का प्रयोग कर सही उत्तर चुनिए:

सूची-I (मनोवैज्ञानिक)	सूची-II (परिभाषा)
1. स्किनर	a. शिक्षा मनोविज्ञान 'शिक्षा का विज्ञान' है।
2. क्रो एवं क्रो	b. शिक्षा मनोविज्ञान व्यक्ति के जन्म से लेकर वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का वर्णन और व्याख्या करता है।
3. पील	c. शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण एवं अधिगम से संबंधित है।
4. वुडवर्थ	d. शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य संबंध सीखने से है। यह मनोविज्ञान का वह अंग है जो शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की वैज्ञानिक व्याख्या करता है।

A 1-c, 2-b, 3-a, 4-d

B 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

C 1-c, 2-a, 3-d, 4-b

D 1-d, 2-c, 3-b, 4-a

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
शिक्षा मनोविज्ञान की परिभाषाओं का सही मिलान इस प्रकार है: बी.एफ. स्किनर (Skinner) के अनुसार, शिक्षा मनोविज्ञान, मनोविज्ञान की वह शाखा है जो शिक्षण (Teaching) और अधिगम (Learning) से संबंधित है। क्रो एवं क्रो (Crow & Crow) ने इसे जन्म से वृद्धावस्था तक के सीखने के अनुभवों का अध्ययन माना है। पील (Peel) ने शिक्षा मनोविज्ञान को 'शिक्षा का विज्ञान' (Science of Education) कहकर परिभाषित किया है। वुडवर्थ (Woodworth) के अनुसार, इसका मुख्य संबंध सीखने से है और यह शिक्षा के मनोवैज्ञानिक पहलुओं की वैज्ञानिक व्याख्या करता है। ये परिभाषाएं स्पष्ट करती हैं कि शिक्षा मनोविज्ञान का मुख्य केंद्र बिंदु मानव व्यवहार में शैक्षिक परिस्थितियों के भीतर होने वाले परिवर्तन और अधिगम की प्रक्रिया है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि वे इन विचारकों के विशिष्ट दृष्टिकोणों को सही ढंग से प्रदर्शित नहीं करते हैं।

पैटर्न: Match the Following

प्र.42 विकास की विभिन्न अवस्थाओं और उनके विशिष्ट मनोवैज्ञानिक उपनामों के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (अवस्था)	सूची-II (उपनाम)
1. शैशवावस्था	a. टोली पूर्व की अवस्था (Pre-gang Age)
2. पूर्व बाल्यावस्था	b. सीखने का आदर्श काल (Ideal Period of Learning)
3. उत्तर बाल्यावस्था	c. संवेगात्मक परिवर्तन की अवस्था (Age of Emotional Change)
4. किशोरावस्था	d. वैचारिक क्रिया अवस्था (Stage of Concrete Operations)

A 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

B 1-b, 2-a, 3-d, 4-c

C 1-c, 2-d, 3-a, 4-b

D 1-b, 2-c, 3-d, 4-a

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
विकास की अवस्थाओं के विशिष्ट उपनामों का सही मिलान इस प्रकार है: वैलेंटाइन ने शैशवावस्था को 'सीखने का आदर्श काल' कहा है क्योंकि इस दौरान सीखने की गति अत्यंत तीव्र होती है। पूर्व बाल्यावस्था (2-6 वर्ष) को 'टोली पूर्व की अवस्था' (Pre-gang Age) कहा जाता है क्योंकि बच्चा अभी समूह में खेलना शुरू ही करता है। उत्तर बाल्यावस्था (6-12 वर्ष) को 'वैचारिक क्रिया अवस्था' या 'मूर्त संक्रियात्मक अवस्था' (पियाजे के अनुसार) कहा जाता है, जहाँ तार्किक चिंतन प्रारंभ होता है। किशोरावस्था को 'संवेगात्मक परिवर्तन' या 'तनाव एवं तूफान की अवस्था' कहा जाता है क्योंकि इस दौरान तीव्र शारीरिक और मानसिक परिवर्तन होते हैं। विकल्प B इन सभी का सही मिलान प्रस्तुत करता है, जबकि अन्य विकल्पों में अवस्थाओं और उनकी विशेषताओं का क्रम त्रुटिपूर्ण है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.43 बाल विकास के प्रमुख सिद्धांतों और उनके अर्थ के संबंध में सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
सूची-I (सिद्धांत)	सूची-II (अर्थ)
1. एकीकरण का सिद्धांत	a. विकास की गति प्रत्येक बालक में भिन्न होती है।
2. समान प्रतिमान का सिद्धांत	b. बालक पहले संपूर्ण अंग को फिर उसके भागों को चलाना सीखता है।
3. व्यक्तिगत भिन्नता का सिद्धांत	c. विकास एक सतत प्रक्रिया है जो कभी नहीं रुकती।
4. निरंतरता का सिद्धांत	d. एक ही जाति के जीवों के विकास का क्रम समान होता है।

A 1-b, 2-d, 3-a, 4-c

B 1-a, 2-b, 3-c, 4-d

C 1-c, 2-a, 3-d, 4-b

D 1-d, 2-c, 3-b, 4-a

✅ **सही उत्तर**: A

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
सही सुमेलित विकल्प 1-b, 2-a, 3-d, 4-c है। 'यथाशक्ति' (शक्ति के अनुसार) में पूर्व पद प्रधान और अव्यय है, इसलिए यह अव्ययीभाव समास है। 'नीलकंठ' (नीला है कंठ जिनका अर्थात् शिव) में दोनों पद मिलकर किसी तीसरे अर्थ की ओर संकेत कर रहे हैं, अतः यह बहुव्रीहि समास है। 'राजपुत्र' (राजा का पुत्र) में उत्तर पद प्रधान है और कारक चिह्न 'का' का लोप है, इसलिए यह तत्पुरुष समास है। 'माता-पिता' में दोनों पद प्रधान हैं और विग्रह करने पर 'और' आता है, इसलिए यह द्वंद्व समास है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि वे समास के नियमों का सही पालन नहीं करते। समास विग्रह करने से पदों की प्रधानता स्पष्ट हो जाती है, जिससे सही भेद की पहचान आसान हो जाती है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.44 संधि के प्रकारों और उनके विशिष्ट उदाहरणों के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
1. वागीश	a. यण संधि
2. महर्षि	b. व्यंजन संधि
3. स्वागत	c. वृद्धि संधि
4. सदैव	d. गुण संधि

A 1-b, 2-d, 3-a, 4-c
B 1-a, 2-b, 3-c, 4-d
C 1-c, 2-a, 3-d, 4-b
D 1-d, 2-c, 3-b, 4-a

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
सही मिलान 1-b, 2-d, 3-a, 4-c है। 'वागीश' का विच्छेद 'वाक् + ईश' है, जहाँ 'क्' का 'ग्' में परिवर्तन व्यंजन संधि का नियम है। 'महर्षि' (महा + ऋषि) में $a + r = ar$ होने के कारण यह गुण स्वर संधि है। 'स्वागत' (सु + आगत) में $u + a = va$ होने के कारण यह यण स्वर संधि का उदाहरण है। 'सदैव' (सदा + एव) में $a + e = ai$ होने के कारण यह वृद्धि स्वर संधि है। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि वे संधि के नियमों और वर्णों के मेल का सही प्रतिनिधित्व नहीं करते हैं। संधि विच्छेद करते समय सार्थक शब्दों का ध्यान रखना अनिवार्य है। यण संधि में प्रायः आधा अक्षर आता है, जबकि वृद्धि संधि में 'ऐ' या 'औ' की मात्रा दिखाई देती है।

पैटर्न: Match the Following

प्र.45 वाक्यांश के लिए एक शब्द के आधार पर सूची-I को सूची-II से सुमेलित कीजिए:

सूची-I	सूची-II
1. अकिंचन	a. जिसका कोई घर न हो
2. अनिकेत	b. जिसके पास कुछ न हो
3. अजातशत्रु	c. जो इन्द्रियों से परे हो
4. अतीन्द्रिय	d. जिसका कोई शत्रु न हो

A 1-a, 2-b, 3-c, 4-d
B 1-b, 2-a, 3-d, 4-c
C 1-c, 2-d, 3-a, 4-b
D 1-d, 2-c, 3-b, 4-a

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
सही सुमेलित क्रम 1-b, 2-a, 3-d, 4-c है। 'अकिंचन' उस व्यक्ति को कहते हैं जिसके पास कुछ भी न हो (अत्यंत निर्धन)। 'अनिकेत' का अर्थ है जिसका कोई घर या निकेतन न हो। 'अजातशत्रु' वह है जिसका कोई शत्रु पैदा ही न हुआ हो। 'अतीन्द्रिय' का अर्थ है जो इन्द्रियों के ज्ञान से परे या बाहर हो। अन्य विकल्प गलत हैं क्योंकि वे शब्दों के अर्थों को आपस में बदल देते हैं। वाक्यांश के लिए एक शब्द भाषा को संक्षिप्त और प्रभावशाली बनाने में मदद करते हैं। इन शब्दों का निर्माण अक्सर उपसर्गों (जैसे 'अ' - नहीं) के प्रयोग से होता है। उदाहरण के लिए, 'निकेत' का अर्थ घर है और 'अ' लगाने से 'बिना घर का' अर्थ निकलता है। इसी प्रकार 'किंचन' का अर्थ कुछ होता है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.46 हिंदी वर्णमाला के उच्चारण स्थानों के आधार पर निम्नलिखित वर्णों को कंठ (Throat) से ओष्ठ (Lips) के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. ट
2. प
3. क
4. च
5. त

A 3, 4, 1, 5, 2
B 3, 1, 4, 5, 2
C 4, 3, 1, 5, 2
D 3, 4, 5, 1, 2

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
हिंदी वर्णमाला में वर्णों का उच्चारण मुख के विभिन्न अंगों से होता है। यदि हम कंठ से बाहर की ओर (ओष्ठ तक) चलें, तो सही क्रम इस प्रकार है:

1. कंठ्य (Kanthya): इसमें 'क' वर्ग (क, ख, ग, घ, ङ) आता है, जो विकल्प 3 में है।

2. तालव्य (Talavya): इसमें 'च' वर्ग (च, छ, ज, झ, ञ) आता है, जो विकल्प 4 में है।

3. मूर्धन्य (Murdhanya): इसमें 'ट' वर्ग (ट, ठ, ड, ढ, ण) आता है, जो विकल्प 1 में है।

4. दंत्य (Dantya): इसमें 'त' वर्ग (त, थ, द, ध, न) आता है, जो विकल्प 5 में है।

5. ओष्ठ्य (Osthya): इसमें 'प' वर्ग (प, फ, ब, भ, म) आता है, जो विकल्प 2 में है।
अतः सही तार्किक क्रम 3, 4, 1, 5, 2 है। अन्य विकल्प इस शारीरिक उच्चारण प्रक्रिया के क्रम का पालन नहीं करते हैं।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.47 निम्नलिखित शब्दों को उनमें प्रयुक्त 'अक्षरों' (Syllables) की संख्या के आधार पर बढ़ते क्रम (आरोही क्रम) में व्यवस्थित कीजिए:

1. कमल

2. अनुशासन

3. श्री

4. जल

A 3, 4, 1, 2

B 4, 3, 1, 2

C 3, 1, 4, 2

D 1, 4, 3, 2

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
हिंदी व्याकरण में 'अक्षर' (Syllable) वह ध्वनि या ध्वनि-समूह है जिसका उच्चारण एक झटके में होता है। दिए गए शब्दों का विश्लेषण इस प्रकार है:

1. 'श्री' में केवल 1 अक्षर है (श्र + ई), अतः यह सबसे पहले आएगा।

2. 'जल' में 2 अक्षर हैं (ज + ल), इसलिए यह दूसरे स्थान पर होगा।

3. 'कमल' में 3 अक्षर हैं (क + म + ल), जो तीसरे स्थान पर आएगा।

4. 'अनुशासन' में 5 अक्षर हैं (अ + नु + शा + स + न), जो सबसे अंत में आएगा।
इस प्रकार, अक्षरों की संख्या के आधार पर सही आरोही क्रम 3 (1 अक्षर), 4 (2 अक्षर), 1 (3 अक्षर), और 2 (5 अक्षर) है। विकल्प A इस क्रम को सही ढंग से दर्शाता है, जबकि अन्य विकल्पों में अक्षरों की गणना त्रुटिपूर्ण है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.48 शब्दों के ऐतिहासिक विकास और भाषाई परिवर्तन के आधार पर 'अग्नि' शब्द के क्रमिक विकास को सही क्रम में लगाइए:

1. अग्गि (प्राकृत)

2. आग (तद्भव/हिंदी)

3. अग्नि (तत्सम/संस्कृत)

4. आगी (पुरानी हिंदी/क्षेत्रीय)

A 3, 1, 2, 4

B 3, 2, 1, 4

C 1, 3, 2, 4

D 3, 1, 4, 2

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी भाषा का विकास संस्कृत से प्राकृत और अपभ्रंश होते हुए आधुनिक हिंदी तक हुआ है।

1. सबसे पहले 'अग्नि' (विकल्प 3) आता है, जो मूल संस्कृत का तत्सम शब्द है।

2. मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा काल में ध्वनियों के सरलीकरण के कारण यह प्राकृत में 'अग्गि' (विकल्प 1) बना।

3. आधुनिक काल के प्रारंभ में यह तद्भव रूप में 'आग' (विकल्प 2) के रूप में प्रचलित हुआ।

4. क्षेत्रीय बोलियों या पुरानी हिंदी के काव्य रूपों में इसे 'आगी' (विकल्प 4) के रूप में भी देखा गया।
अतः ऐतिहासिक और भाषाई विकास का सही क्रम 3-1-2-4 है। अन्य विकल्प भाषाई विकास के कालक्रम के विरुद्ध हैं क्योंकि वे तद्भव को तत्सम से पहले या प्राकृत को संस्कृत से पहले रखते हैं।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.49 समास के भेदों को उनके 'पदों की प्रधानता' (Dominance of Terms) **के आधार पर 'पूर्व पद प्रधान' से 'अन्य पद प्रधान' के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:**

1. द्वंद्व समास

2. अव्ययीभाव समास

3. बहुव्रीहि समास

4. तत्पुरुष समास

A 2, 4, 1, 3

B 2, 1, 4, 3

C 4, 2, 1, 3

D 2, 4, 3, 1

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
समास में पदों की प्रधानता के आधार पर वर्गीकरण इस प्रकार है:

1. अव्ययीभाव समास (विकल्प 2): इसमें 'पूर्व पद' (पहला पद) प्रधान होता है।

2. तत्पुरुष समास (विकल्प 4): इसमें 'उत्तर पद' (दूसरा पद) प्रधान होता है।

3. द्वंद्व समास (विकल्प 1): इसमें 'दोनों पद' (उभय पद) प्रधान होते हैं।

4. बहुव्रीहि समास (विकल्प 3): इसमें कोई भी पद प्रधान न होकर 'अन्य पद' (तीसरा अर्थ) प्रधान होता है।
इस प्रकार, पदों की प्रधानता के तार्किक विकास (पहला -> दूसरा -> दोनों -> कोई नहीं) के अनुसार सही क्रम 2, 4, 1, 3 है। विकल्प A इस व्याकरणिक व्यवस्था का सही प्रतिनिधित्व करता है। अन्य विकल्प पदों की प्रधानता के नियमों का सही क्रम नहीं बताते।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.50 हिंदी शब्दकोश (Dictionary) **के अनुसार निम्नलिखित शब्दों के आने का सही क्रम क्या होगा?**

1. क्षमा

2. कंचन

3. क्रम

4. कमल

A 2, 4, 3, 1

B 2, 4, 1, 3

C 4, 2, 3, 1

D 2, 1, 4, 3

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी शब्दकोश के नियमों के अनुसार शब्दों का क्रम वर्णमाला से थोड़ा भिन्न होता है:

1. सबसे पहले अनुस्वार (ं) या चंद्रबिंदु वाले वर्ण आते हैं, इसलिए 'कंचन' (विकल्प 2) प्रथम स्थान पर होगा।

2. उसके बाद बिना मात्रा वाले सामान्य वर्ण आते हैं, अतः 'कमल' (विकल्प 4) दूसरे स्थान पर आएगा।

3. इसके बाद संयुक्त व्यंजन आते हैं। 'क्रम' में 'क' के बाद 'र' है, जबकि 'क्षमा' में 'क' के बाद 'ष' है। वर्णमाला में 'र' (य, र, ल, व) पहले आता है और 'ष' (श, ष, स, ह) बाद में।

4. इसलिए 'क्रम' (विकल्प 3) तीसरे स्थान पर और 'क्षमा' (विकल्प 1) चौथे स्थान पर होगा।
अतः सही शब्दकोश क्रम 2, 4, 3, 1 है। विकल्प A पूर्णतः सटीक है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.51 मुख के भीतर के उच्चारण स्थानों को वायु प्रवाह की दिशा में 'भीतर (कंठ) से बाहर (ओष्ठ)' की ओर सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. मूर्धन्य (Murdhanya)

2. ओष्ठ्य (Oshthya)

3. कंठ्य (Kanthya)

4. तालव्य (Talavya)

5. दंत्य (Dantya)

A 3, 4, 1, 5, 2

B 3, 1, 4, 5, 2

C 1, 3, 4, 5, 2

D 3, 4, 5, 1, 2

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी वर्णमाला में वर्णों के उच्चारण का एक निश्चित वैज्ञानिक क्रम है जो फेफड़ों से निकलने वाली वायु के मुख अवयवों को स्पर्श करने के आधार पर निर्धारित है। सबसे पहले वायु 'कंठ' (3) को स्पर्श करती है, जहाँ से 'क' वर्ग उच्चारित होता है। इसके बाद वायु मुख के ऊपरी कठोर भाग 'तालु' (4) को छूती है (च वर्ग)। तालु के ठीक ऊपर और आगे का भाग 'मूर्धा' (1) कहलाता है (ट वर्ग)। इसके पश्चात वायु 'दांतों' (5) को स्पर्श करती है (त वर्ग) और अंत में 'होठों' (2) के माध्यम से बाहर निकलती है (प वर्ग)। अन्य विकल्प इस प्राकृतिक और शारीरिक क्रम का उल्लंघन करते हैं, जैसे विकल्प B में मूर्धन्य को तालव्य से पहले रखा गया है, जो कि अशुद्ध है। संबंधित तथ्य यह है कि स्वरयंत्र से ओष्ठ तक की इस दूरी को 'उच्चारण अवयव' कहा जाता है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.52 हिंदी शब्दकोश (Hindi Dictionary) के नियमों के अनुसार निम्नलिखित शब्दों को उनके आने के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. क्षमा

2. कंचन

3. क्रम

4. कमल

A 2, 4, 3, 1

B 2, 4, 1, 3

C 4, 2, 1, 3

D 1, 2, 4, 3

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी शब्दकोश का क्रम वर्णमाला से थोड़ा भिन्न होता है। सबसे पहले अनुस्वार (ं) और चंद्रबिंदु (ँ) वाले वर्ण आते हैं, इसलिए 'कंचन' (2) प्रथम स्थान पर होगा। इसके बाद बिना मात्रा वाले वर्ण आते हैं, अतः 'कमल' (4) दूसरे स्थान पर आएगा। संयुक्त वर्णों में 'क्ष' का निर्माण 'क + ष' से होता है, इसलिए यह 'क' वर्ग की सभी मात्राओं (क, का, कि... कौ) के बाद और 'ख' से पहले आता है, अतः 'क्षमा' (1) तीसरे स्थान पर होगा। अंत में 'र' के संयोग वाले वर्ण जैसे 'क्रम' (3) आएंगे क्योंकि 'र' व्यंजन वर्णमाला में बाद में आता है। विकल्प A, C और D शब्दकोश के इन विशिष्ट नियमों (अनुस्वार की प्राथमिकता और संयुक्त अक्षर की स्थिति) की अनदेखी करते हैं।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.53 भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम के आधार पर निम्नलिखित भाषाओं को 'प्राचीन से नवीन' के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. अपभ्रंश

2. पालि

3. संस्कृत

4. प्राकृत

A 3, 4, 2, 1

B 2, 3, 4, 1

C 3, 2, 4, 1

D 3, 2, 1, 4

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी भाषा का विकास एक लंबी ऐतिहासिक प्रक्रिया का परिणाम है। सबसे प्राचीन भाषा 'संस्कृत' (3) है, जिसे देववाणी कहा जाता है (1500 ई.पू. से 500 ई.पू.)। संस्कृत के सरल रूप से 'पालि' (2) का जन्म हुआ, जो बौद्ध धर्म की मुख्य भाषा बनी (500 ई.पू. से 1 ईस्वी)। पालि के बाद 'प्राकृत' (4) भाषा का काल आया, जो जैन धर्म और लोकभाषा के रूप में विकसित हुई (1 ईस्वी से 500 ईस्वी)। प्राकृत के भाषाई पतन और क्षेत्रीय रूपांतरण से 'अपभ्रंश' (1) का उदय हुआ (500 ईस्वी से 1000 ईस्वी), जिससे आधुनिक हिंदी निकली। विकल्प A में प्राकृत को पालि से पहले रखा गया है, जो ऐतिहासिक रूप से गलत है। विकल्प B और D भी कालक्रम की निरंतरता को सही ढंग से प्रदर्शित नहीं करते हैं।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.54 भाषाई विकास और सरलीकरण के आधार पर 'कार्य' शब्द के विभिन्न रूपों को 'तत्सम से तद्भव' (प्राचीनतम से आधुनिकतम) के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. काम

2. करज

3. कार्य

4. कज्ज

A 3, 4, 2, 1

B 3, 1, 4, 2

C 3, 2, 4, 1

D 4, 3, 2, 1

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
शब्दों का विकास तत्सम (संस्कृत) से तद्भव (हिंदी) की ओर हुआ है। मूल संस्कृत शब्द 'कार्य' (3) है, जो पूर्णतः तत्सम है। प्राकृत काल में ध्वनियों के समीकरण के कारण यह 'कज्ज' (4) में परिवर्तित हुआ। इसके बाद अर्ध-तत्सम रूप में यह 'करज' (2) के रूप में ग्रामीण बोलियों में प्रचलित हुआ। अंततः भाषाई सरलीकरण के कारण आधुनिक हिंदी में यह 'काम' (1) के रूप में पूर्ण तद्भव बन गया। विकल्प B और C में विकास के मध्यवर्ती चरणों (प्राकृत और अर्ध-तत्सम) का क्रम गलत दिया गया है। विकल्प D में अशुद्ध रूप से प्राकृत को संस्कृत से पहले रखा गया है। याद रखें कि तत्सम शब्द हमेशा मूल स्रोत होते हैं और तद्भव उनका अंतिम विकसित रूप।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.55 जिह्वा के उत्थापित भाग (Position of Tongue) के आधार पर स्वरों के वर्गीकरण को मुख के 'अग्र भाग से पश्च भाग' के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. पश्च स्वर (उ, ऊ, ओ, औ, आ)

2. अग्र स्वर (इ, ई, ए, ऐ)

3. मध्य स्वर (अ)

A 2, 1, 3

B 2, 3, 1

C 3, 2, 1

D 1, 3, 2

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
उच्चारण के समय जीभ का कौन सा हिस्सा सक्रिय है, इस आधार पर स्वरों को तीन भागों में बांटा गया है। सबसे पहले 'अग्र स्वर' (2) आते हैं, जिनके उच्चारण में जीभ का अगला हिस्सा ऊपर उठता है (जैसे इ, ई, ए, ऐ)। इसके बाद 'मध्य स्वर' (3) आता है, जिसमें केवल 'अ' शामिल है; इसमें जीभ का मध्य भाग सामान्य स्थिति में रहता है। अंत में 'पश्च स्वर' (1) आते हैं, जिनके उच्चारण में जीभ का पिछला हिस्सा सक्रिय होता है (जैसे उ, ऊ, ओ, औ, आ)। विकल्प A, C और D में जीभ की शारीरिक स्थिति के अनुसार क्रम गलत है। यह वर्गीकरण ध्वन्यात्मक शुद्धता और स्वर तंत्र की कार्यप्रणाली को समझने के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.56 भाषा की संरचनात्मक इकाइयों को उनके आकार और सार्थकता के आधार पर 'लघुतम से वृहत्तम' (सबसे छोटी से सबसे बड़ी) के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. वाक्य
2. शब्द
3. वर्ण
4. पद

A 3, 2, 4, 1
B 2, 3, 1, 4
C 3, 4, 2, 1
D 1, 4, 2, 3

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
भाषा की सबसे छोटी और अविभाज्य इकाई 'वर्ण' (3) है, जिसका अपना कोई स्वतंत्र अर्थ नहीं होता। वर्णों के सार्थक मेल से 'शब्द' (2) का निर्माण होता है। जब किसी शब्द का प्रयोग वाक्य में व्याकरणिक नियमों (जैसे लिंग, वचन, कारक) के अनुसार किया जाता है, तो वह 'पद' (4) कहलाता है। अंत में, पदों के सार्थक और व्यवस्थित समूह को 'वाक्य' (1) कहते हैं, जो पूर्ण विचार व्यक्त करने में सक्षम होता है। अतः सही क्रम वर्ण → शब्द → पद → वाक्य है। अन्य विकल्प इस भाषाई पदानुक्रम का सही पालन नहीं करते हैं। वर्ण ध्वनि का लिखित रूप है, जबकि वाक्य भाषा की पूर्ण सार्थक इकाई है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.57 शब्दों के ऐतिहासिक विकास और भाषाई परिवर्तन के आधार पर 'अग्नि' शब्द के क्रमिक विकास (तत्सम से तद्भव की ओर) को सही क्रम में लगाइए:

1. आग
2. अगिन
3. अग्नि
4. अग्गि

A 3, 2, 4, 1
B 3, 1, 4, 2
C 3, 4, 2, 1
D 4, 3, 2, 1

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी भाषा में शब्दों का विकास संस्कृत से आधुनिक हिंदी तक कई चरणों में हुआ है। सबसे पहले मूल संस्कृत शब्द 'अग्नि' (3) आता है, जिसे 'तत्सम' कहा जाता है। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषा (प्राकृत) के प्रभाव से यह 'अग्गि' (4) में परिवर्तित हुआ। इसके बाद, उच्चारण की सरलता के लिए लोकभाषा में 'अगिन' (2) जैसा अर्ध-तत्सम रूप विकसित हुआ। अंततः, आधुनिक हिंदी में यह पूरी तरह परिवर्तित होकर 'आग' (1) बन गया, जिसे 'तद्भव' शब्द कहा जाता है। इस प्रकार विकास का सही क्रम तत्सम → प्राकृत → अर्ध-तत्सम → तद्भव है। विकल्प C इस ऐतिहासिक भाषाई यात्रा को सटीक रूप से दर्शाता है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.58 हिंदी शब्दकोश (Hindi Dictionary) के नियमों के अनुसार निम्नलिखित शब्दों को उनके आने के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. क्रम
2. कंचन
3. क्षमा
4. कपट

A 2, 1, 4, 3
B 2, 4, 1, 3
C 4, 2, 3, 1
D 2, 4, 3, 1

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी शब्दकोश के अनुसार, सबसे पहले अनुस्वार (ं) या चंद्रबिंदु वाले वर्ण आते हैं, इसलिए 'कंचन' (2) प्रथम स्थान पर होगा। इसके बाद बिना मात्रा वाले पूर्ण वर्ण आते हैं, जिससे 'कपट' (4) दूसरे स्थान पर आएगा। संयुक्त वर्णों (आधे अक्षर) के क्रम में, 'क्र' (क + र) और 'क्ष' (क + ष) की तुलना करने पर, चूँकि वर्णमाला में 'र' व्यंजन 'ष' से पहले आता है, इसलिए 'क्रम' (1) तीसरे स्थान पर और 'क्षमा' (3) अंतिम स्थान पर आएगा। ध्यान दें कि 'क्ष' एक संयुक्त व्यंजन है जो 'क' और 'ष' के मेल से बनता है, इसलिए यह शब्दकोश में 'क' वर्ग के अंत में (कौ के बाद) आता है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.59 मुख-विवर (Mouth Opening) के खुलने के आधार पर स्वरों के वर्गीकरण को 'पूर्णतः खुले मुख से लगभग बंद मुख' (विवृत से संवृत) के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. संवृत (जैसे: इ, ई, उ, ऊ)
2. विवृत (जैसे: आ)
3. अर्ध-संवृत (जैसे: ए, ओ)
4. अर्ध-विवृत (जैसे: अ, ऐ, औ)

A 2, 3, 4, 1
B 1, 3, 4, 2
C 2, 1, 3, 4
D 2, 4, 3, 1

✅ **सही उत्तर**: D

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
उच्चारण विज्ञान में मुख के खुलने की स्थिति के आधार पर स्वरों का वर्गीकरण किया जाता है। 'विवृत' (2) स्वर के उच्चारण में मुख सबसे अधिक खुलता है (जैसे: आ)। 'अर्ध-विवृत' (4) में मुख विवृत की तुलना में थोड़ा कम खुलता है (जैसे: अ, ऐ, औ)। 'अर्ध-संवृत' (3) में मुख आधा बंद रहता है (जैसे: ए, ओ)। अंत में, 'संवृत' (1) स्वर के उच्चारण में मुख लगभग बंद रहता है और वायु संकरे मार्ग से निकलती है (जैसे: इ, ई, उ, ऊ)। अतः सही क्रम विवृत → अर्ध-विवृत → अर्ध-संवृत → संवृत है। यह वर्गीकरण ध्वन्यात्मक शुद्धता और उच्चारण स्पष्टता के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.60 शब्द निर्माण की प्रक्रिया और जटिलता के आधार पर निम्नलिखित रूपों को 'मूल शब्द से सर्वाधिक प्रत्यय युक्त शब्द' के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. आहारित
2. हार
3. आहारिकता
4. आहार

A 2, 4, 1, 3
B 2, 1, 4, 3
C 4, 2, 1, 3
D 2, 4, 3, 1

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
शब्द रचना में सबसे सरल रूप 'मूल शब्द' होता है। यहाँ 'हार' (2) मूल शब्द है। इसमें 'आ' उपसर्ग जोड़ने पर 'आहार' (4) शब्द बनता है, जो विकास का दूसरा चरण है। इसके बाद 'आहार' में 'इत' प्रत्यय जोड़ने से 'आहारित' (1) शब्द निर्मित होता है। अंत में, 'आहारित' में 'का' या 'ता' जैसे अतिरिक्त प्रत्यय (आहार + इक + ता) जोड़ने से 'आहारिकता' (3) जैसा जटिल शब्द बनता है। इस प्रकार, संरचनात्मक जटिलता का सही क्रम मूल शब्द → उपसर्ग युक्त → एक प्रत्यय युक्त → बहु-प्रत्यय युक्त है। विकल्प A इस तार्किक और व्याकरणिक वृद्धि को सही ढंग से प्रस्तुत करता है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.61 हिंदी वर्णमाला के उच्चारण स्थानों के आधार पर निम्नलिखित वर्णों को मुख के आंतरिक भाग (कंठ) से बाह्य भाग (ओष्ठ) की ओर सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. त
2. क
3. प
4. च

A 2, 4, 1, 3
B 2, 1, 4, 3
C 4, 2, 1, 3
D 1, 2, 3, 4

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

हिंदी वर्णमाला में वर्णों का वर्गीकरण उनके उच्चारण स्थान के आधार पर एक वैज्ञानिक क्रम में किया गया है। यह क्रम मुख के भीतर से बाहर की ओर (कंठ से ओष्ठ तक) चलता है।

1. **क (कंठ्य):** इसका उच्चारण कंठ से होता है, जो सबसे आंतरिक भाग है (क्रम 2)।

2. **च (तालव्य):** इसका उच्चारण तालु से होता है, जो कंठ के बाद आता है (क्रम 4)।

3. **त (दंत्य):** इसका उच्चारण दांतों की सहायता से होता है (क्रम 1)।

4. **प (ओष्ठ्य):** इसका उच्चारण दोनों होठों के मिलने से होता है, जो सबसे बाहरी भाग है (क्रम 3)।

अतः सही वैज्ञानिक क्रम 2, 4, 1, 3 है। अन्य विकल्प इस शारीरिक उच्चारण प्रक्रिया के क्रम का पालन नहीं करते हैं।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.62 भारतीय आर्य भाषाओं के ऐतिहासिक विकास क्रम के आधार पर निम्नलिखित चरणों को प्राचीनतम से आधुनिकतम के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. अवहट्ट

2. संस्कृत

3. अपभ्रंश

4. प्राकृत

A 2, 3, 4, 1

B 2, 4, 3, 1

C 4, 2, 3, 1

D 1, 2, 3, 4

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

हिंदी भाषा का विकास एक लंबी ऐतिहासिक यात्रा का परिणाम है। इसका सही कालक्रम इस प्रकार है:

1. **संस्कृत (2):** यह सबसे प्राचीन आर्य भाषा है (1500 ई.पू. - 500 ई.पू.)।

2. **प्राकृत (4):** पाली के बाद प्राकृत का काल आता है (1 ईस्वी - 500 ईस्वी)।

3. **अपभ्रंश (3):** प्राकृत के भाषाई सरलीकरण से अपभ्रंश का उदय हुआ (500 ईस्वी - 1000 ईस्वी)।

4. **अवहट्ट (1):** यह अपभ्रंश का ही परवर्ती या संक्रमणकालीन रूप है, जिससे आधुनिक हिंदी का जन्म हुआ।

इस प्रकार, विकास का सही क्रम 2, 4, 3, 1 है। अन्य विकल्प ऐतिहासिक भाषाई विकास के चरणों को गलत क्रम में दर्शाते हैं।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.63 हिंदी शब्दकोश (Hindi Dictionary) के नियमों के अनुसार निम्नलिखित शब्दों को उनके आने के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. क्षमा

2. कंचन

3. कोमल

4. कृषक

A 2, 4, 3, 1

B 1, 2, 3, 4

C 2, 3, 4, 1

D 4, 2, 1, 3

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
हिंदी शब्दकोश में शब्दों का क्रम वर्णमाला से थोड़ा भिन्न होता है। सबसे पहले अनुस्वार/चंद्रबिंदु वाले वर्ण आते हैं, फिर स्वर मात्राएँ और अंत में संयुक्त व्यंजन।

1. **कंचन (2):** इसमें 'क' पर अनुस्वार है, इसलिए यह सबसे पहले आएगा।

2. **कृषक (4):** अनुस्वार के बाद स्वर मात्राओं का क्रम आता है। 'ऋ' की मात्रा 'ओ' से पहले आती है।

3. **कोमल (3):** 'ओ' की मात्रा 'ऋ' के बाद आती है।

4. **क्षमा (1):** 'क्ष' एक संयुक्त व्यंजन है जो $k + sh$ से बना है। शब्दकोश में यह 'क' वर्ग की सभी स्वर मात्राओं (क, का... कौ) के समाप्त होने के बाद आता है।

अतः सही शब्दकोश क्रम 2, 4, 3, 1 है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.64 शब्दों के ऐतिहासिक और व्याकरणिक विकास के आधार पर 'हाथ' शब्द के विभिन्न रूपों को प्राचीनतम (संस्कृत) से आधुनिकतम (तद्भव) के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. हाथ

2. हस्त

3. हत्थ

4. हस्तः

A 2, 4, 3, 1

B 4, 2, 3, 1

C 4, 3, 2, 1

D 1, 2, 3, 4

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
शब्दों का विकास तत्सम से तद्भव की ओर एक निश्चित भाषाई प्रक्रिया के तहत हुआ है।

1. **हस्तः (4):** यह वैदिक या लौकिक संस्कृत का विभक्ति युक्त मूल रूप है।

2. **हस्त (2):** यह संस्कृत का मूल तत्सम रूप है जो हिंदी में बिना परिवर्तन के प्रयुक्त होता है।

3. **हत्थ (3):** प्राकृत और अपभ्रंश काल में ध्वनियों के सरलीकरण के कारण 'स्त' का 'त्थ' हो गया।

4. **हाथ (1):** यह आधुनिक हिंदी का तद्भव रूप है, जहाँ मध्यवर्ती व्यंजनों का लोप होकर स्वर दीर्घ हो गया।

अतः विकास का सही क्रम 4, 2, 3, 1 है। यह क्रम भाषाई सरलीकरण के सिद्धांत (Law of Least Effort) को दर्शाता है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.65 निम्नलिखित शब्दों को उनमें प्रयुक्त 'वर्णों' (Phonemes) की कुल संख्या के आधार पर बढ़ते क्रम (न्यूनतम से अधिकतम) में व्यवस्थित कीजिए:

1. विद्यालय

2. पत्र

3. माँ

4. कमल

A 3, 2, 4, 1

B 2, 3, 4, 1

C 3, 4, 2, 1

D 1, 4, 2, 3

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
वर्ण विच्छेद के माध्यम से वर्णों की गणना इस प्रकार है:

1. **माँ (3):** $m + \bar{a}$ (यहाँ अनुनासिक स्वर का गुण है, अलग वर्ण नहीं) = 2 वर्ण।

2. **पत्र (2):** $p + a + t + r + a$ = 5 वर्ण।

3. **कमल (4):** $k + a + m + a + l + a$ = 6 वर्ण।

4. **विद्यालय (1):**
$v + i + d + y + \bar{a} + l + a + y + a$ = 9 वर्ण।

बढ़ते क्रम में व्यवस्थित करने पर सबसे पहले 'माँ' (2 वर्ण), फिर 'पत्र' (5 वर्ण), फिर 'कमल' (6 वर्ण) और अंत में 'विद्यालय' (9 वर्ण) आएगा। अतः सही क्रम 3, 2, 4, 1 है। अन्य विकल्पों में वर्णों की गणना या क्रम त्रुटिपूर्ण है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.66 व्यंजनों के 'आभ्यंतर प्रयत्न' (Internal Effort) **के आधार पर निम्नलिखित वर्णों को उनके वर्गीकरण के सही क्रम (स्पर्श -> स्पर्श-संघर्षी -> संघर्षी -> अंतस्थ) में व्यवस्थित कीजिए:**

1. स

2. प

3. ल

4. च

A 2, 4, 1, 3

B 1, 2, 3, 4

C 4, 2, 3, 1

D 2, 3, 4, 1

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
सही क्रम 2, 4, 1, 3 है। हिंदी व्याकरण में व्यंजनों का वर्गीकरण उनके उच्चारण के समय होने वाले प्रयत्न के आधार पर किया जाता है। सबसे पहले 'स्पर्श' व्यंजन आते हैं, जिनमें वायु मार्ग पूर्णतः अवरुद्ध होता है, जैसे 'प' (ओष्ठ्य स्पर्श)। इसके बाद 'स्पर्श-संघर्षी' आते हैं जिनमें स्पर्श के साथ घर्षण भी होता है, जैसे 'च' वर्ग के वर्ण। तीसरे स्थान पर 'संघर्षी' व्यंजन आते हैं जहाँ वायु संकीर्ण मार्ग से रगड़ खाकर निकलती है, जैसे 'स' (ऊष्म)। अंत में 'अंतस्थ' व्यंजन आते हैं जो स्वर और व्यंजन के बीच की स्थिति रखते हैं, जैसे 'ल' (पार्श्विक)। अन्य विकल्प इस तकनीकी क्रम का पालन नहीं करते हैं।

संबंधित तथ्य:
• स्पर्श व्यंजनों की संख्या 25 है (क से म तक)।
• अंतस्थ व्यंजन चार हैं: य, र, ल, व।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.67 हिंदी शब्दकोश (Hindi Dictionary) **के नियमों के अनुसार निम्नलिखित शब्दों को उनके आने के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:**

1. सागर

2. स्वीकार

3. संशय

4. सत्य

A 3, 1, 4, 2

B 3, 4, 1, 2

C 4, 3, 1, 2

D 1, 2, 3, 4

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

हिंदी शब्दकोश के अनुसार सही क्रम 3, 4, 1, 2 है। शब्दकोश के नियमों के अनुसार, सबसे पहले अनुस्वार (ं) या चंद्रबिंदु वाले वर्ण आते हैं, इसलिए 'संशय' (3) प्रथम स्थान पर होगा। इसके बाद बिना मात्रा वाले व्यंजन आते हैं, अतः 'सत्य' (4) दूसरे स्थान पर आएगा। तत्पश्चात मात्राओं का क्रम (आ, इ, ई...) शुरू होता है, जिससे 'सागर' (1) तीसरे स्थान पर आएगा। अंत में संयुक्ताक्षर या आधे अक्षर वाले शब्द आते हैं, इसलिए 'स्वीकार' (2) अंतिम स्थान पर होगा। अन्य विकल्प इन नियमों का उल्लंघन करते हैं।

मुख्य नियम:
• शब्दकोश में 'अं' और 'अः' स्वरों से पहले आते हैं।
• संयुक्ताक्षर (जैसे क्ष, त्र, ज्ञ) अपने मूल प्रथम वर्ण के बाद आते हैं (जैसे 'क्ष' क के बाद)।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.68 शब्दों के ऐतिहासिक और भाषाई विकास के आधार पर 'वत्स' शब्द के क्रमिक परिवर्तन को प्राचीनतम (तत्सम) से आधुनिकतम (तद्भव) के सही क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

K. बच्चा

L. वच्छ

M. वत्स

N. बाछा

A M, L, K, N

B M, L, N, K

C K, L, M, N

D L, M, N, K

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**

सही ऐतिहासिक क्रम M, L, N, K है। शब्द का विकास संस्कृत (तत्सम) से शुरू होकर आधुनिक हिंदी तक पहुँचता है। सबसे पहले मूल संस्कृत शब्द 'वत्स' (M) आता है। प्राकृत भाषा के प्रभाव से इसमें ध्वन्यात्मक परिवर्तन हुआ और यह 'वच्छ' (L) बना। पुरानी हिंदी या अपभ्रंश काल में यह 'बाछा' (N) के रूप में प्रचलित हुआ, जो आज भी कई ग्रामीण बोलियों में जीवित है। अंततः आधुनिक मानक हिंदी में सरलीकरण के कारण यह 'बच्चा' (K) के रूप में स्थापित हुआ। अन्य विकल्प भाषाई विकास के इस कालक्रम को सही ढंग से नहीं दर्शाते हैं।

विकास प्रक्रिया:
• तत्सम (वत्स) -> प्राकृत (वच्छ) -> पुरानी हिंदी (बाछा) -> आधुनिक तद्भव (बच्चा)।
• यह परिवर्तन मुख-सुख और उच्चारण के सरलीकरण के कारण होता है।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.69 निम्नलिखित शब्दों को उनमें प्रयुक्त 'कुल वर्णों' (Phonemes) की संख्या के आधार पर बढ़ते क्रम (न्यूनतम से अधिकतम) में व्यवस्थित कीजिए:

1. सत्य

2. ओ

3. व्याकरण

4. गौ

A 2, 4, 1, 3

B 2, 1, 4, 3

C 4, 2, 1, 3

D 1, 2, 3, 4

✅ **सही उत्तर**: A

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
वर्ण विच्छेद के आधार पर सही क्रम 2, 4, 1, 3 है।

1. 'ओ' (2) एक स्वर है, अतः इसमें केवल 1 वर्ण है।

2. 'गौ' (4) का विच्छेद $ग + औ$ है, जिसमें 2 वर्ण हैं।

3. 'सत्य' (1) का विच्छेद $स + अ + त + य + अ$ है, जिसमें कुल 5 वर्ण हैं।

4. 'व्याकरण' (3) का विच्छेद
$व + य + आ + क + अ + र + अ + ण + अ$ है, जिसमें कुल 9 वर्ण हैं।
इस प्रकार संख्यात्मक क्रम $1 < 2 < 5 < 9$ बनता है। अन्य विकल्पों में वर्णों की गणना त्रुटिपूर्ण है।

याद रखें:
• स्वर स्वयं में एक वर्ण है।
• व्यंजन में स्वर जुड़ने पर वर्णों की संख्या बढ़ती है।
• आधे अक्षर (हलंत युक्त) के साथ स्वर नहीं जुड़ता।

पैटर्न: Chronological Order / Arrange

प्र.70 भाषाई सरलीकरण और तद्भव निर्माण की प्रक्रिया के आधार पर 'संध्या' शब्द के विभिन्न रूपों को प्राचीनतम से आधुनिकतम (बोलीगत रूप सहित) के क्रम में व्यवस्थित कीजिए:

1. साँझ

2. संध्या

3. सँझिया

4. संझा

A 2, 1, 4, 3
B 2, 4, 1, 3
C 1, 2, 3, 4
D 4, 2, 1, 3

✅ **सही उत्तर**: B

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
सही क्रम 2, 4, 1, 3 है। यह क्रम शब्द के तत्सम से तद्भव और फिर देशज/बोलीगत रूप में परिवर्तन को दर्शाता है। सबसे पहले मूल संस्कृत शब्द 'संध्या' (2) आता है। मध्यकालीन भारतीय आर्य भाषाओं (प्राकृत) में यह 'संझा' (4) में परिवर्तित हुआ। इसके बाद हिंदी के विकास क्रम में अनुनासिकता के साथ यह 'साँझ' (1) बना, जो मानक तद्भव रूप है। अंत में, लोक बोलियों में प्रत्यय जुड़ने से 'सँझिया' (3) जैसा देशज रूप विकसित हुआ। अन्य विकल्प इस भाषाई यात्रा के तर्कसंगत क्रम को बाधित करते हैं।

महत्वपूर्ण बिंदु:
• तत्सम: मूल संस्कृत रूप।
• तद्भव: समय के साथ बदला हुआ रूप।
• देशज/बोलीगत: क्षेत्रीय प्रभाव से निर्मित रूप।

पैटर्न: Not Correct

प्र.71 हिंदी वर्णमाला में वर्णों के बाह्य प्रयत्न (अघोष, सघोष, अल्पप्राण और महाप्राण) के वर्गीकरण के संदर्भ में कौन सा विकल्प 'गलत' है?

A क - अघोष और अल्पप्राण
B ख - अघोष और महाप्राण
C ग - सघोष और अल्पप्राण
D झ - अघोष और महाप्राण

✅ **सही उत्तर**: D

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
विकल्प D गलत है क्योंकि 'झ' वर्ण 'सघोष और महाप्राण' की श्रेणी में आता है, न कि अघोष।

वर्णों के वर्गीकरण के अनुसार, प्रत्येक वर्ग का पहला और दूसरा वर्ण 'अघोष' होता है, जबकि तीसरा, चौथा और पांचवां वर्ण 'सघोष' होता है। साथ ही, पहला, तीसरा और पांचवां वर्ण 'अल्पप्राण' तथा दूसरा और चौथा वर्ण 'महाप्राण' होता है। 'झ' च-वर्ग का चौथा वर्ण है, इसलिए यह सघोष (चौथा वर्ण होने के कारण) और महाप्राण (सम स्थान पर होने के कारण) है।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:
- 'क' (पहला वर्ण): अघोष और अल्पप्राण (सही)।
- 'ख' (दूसरा वर्ण): अघोष और महाप्राण (सही)।
- 'ग' (तीसरा वर्ण): सघोष और अल्पप्राण (सही)।

महत्वपूर्ण तथ्य:
- सभी स्वर सघोष और अल्पप्राण होते हैं।
- श, ष, स अघोष महाप्राण हैं।
- ह सघोष महाप्राण है।

याद रखने की ट्रिक: अघोष = 12 (पहला, दूसरा), सघोष = 345; अल्पप्राण = 135, महाप्राण = 24।

पैटर्न: Not Correct

प्र.72 संधि विच्छेद और उसके प्रकार के मेल के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प 'अशुद्ध' है?

A निः + फल = निष्फल (विसर्ग संधि)

B वाक् + ईश = वागीश (व्यंजन संधि)

C सत् + चित् = सच्चित् (विसर्ग संधि)

D महा + ईश = महेश (गुण स्वर संधि)

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
विकल्प C अशुद्ध है क्योंकि 'सत् + चित् = सच्चित्' व्यंजन संधि का उदाहरण है, विसर्ग संधि का नहीं।

व्यंजन संधि के नियमानुसार, यदि 'त' या 'द' के बाद 'च' या 'छ' आए, तो 'त/द' का परिवर्तन 'च' में हो जाता है। यहाँ 'सत्' का अंतिम वर्ण 'त' और 'चित्' का प्रथम वर्ण 'च' मिलकर 'च्च' बनाते हैं। विसर्ग संधि में विसर्ग (:) का होना अनिवार्य है, जो यहाँ नहीं है।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:
- निष्फल: विसर्ग के बाद 'फ' आने पर विसर्ग 'ष' में बदल गया (सही)।
- वागीश: वर्ग के प्रथम वर्ण 'क' का अपने ही वर्ग के तीसरे वर्ण 'ग' में परिवर्तन (सही)।
- महेश: अ + ई = ए (गुण संधि का नियम, सही)।

संबंधित तथ्य:
- व्यंजन संधि में व्यंजन का मेल व्यंजन या स्वर से होता है।
- विसर्ग संधि में विसर्ग का मेल स्वर या व्यंजन से होता है।

पैटर्न: Not Correct

प्र.73 शब्दों की उत्पत्ति (Source) के आधार पर तत्सम और उनके संगत तद्भव रूपों के युग्मों में से कौन सा 'गलत' है?

A क्षीर - खीर

B श्रृंग - सींग

C दधि - दूध

D कर्पूर - कपूर

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या:**
विकल्प C गलत है क्योंकि 'दधि' का तद्भव रूप 'दही' होता है, 'दूध' नहीं।

'दूध' एक तद्भव शब्द है जिसका तत्सम रूप 'दुग्ध' होता है। तत्सम शब्द वे होते हैं जो संस्कृत से ज्यों के त्यों हिंदी में आए हैं, जबकि तद्भव शब्द वे हैं जो समय के साथ परिवर्तित होकर सरल बन गए हैं।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:
- क्षीर (तत्सम) का तद्भव 'खीर' है (सही)।
- श्रृंग (तत्सम) का तद्भव 'सींग' है (सही)।
- कर्पूर (तत्सम) का तद्भव 'कपूर' है (सही)।

महत्वपूर्ण बिंदु:
- तत्सम शब्दों में प्रायः 'क्ष', 'श्र', 'ऋ', 'ष' जैसे वर्णों का प्रयोग अधिक होता है।
- तद्भव शब्द उच्चारण में सरल और लोकभाषा के निकट होते हैं।

पैटर्न: Not Correct

प्र.74 समास के भेदों और उनके उदाहरणों के संबंध में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म 'सुमेलित नहीं' है?

A यथाशक्ति - अव्ययीभाव समास

B लंबोदर - बहुव्रीहि समास

C चौराहा - द्वंद्व समास

D राजपुत्र - तत्पुरुष समास

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
विकल्प C सुमेलित नहीं है क्योंकि 'चौराहा' द्विगु समास का उदाहरण है, द्वंद्व समास का नहीं।

'चौराहा' का विग्रह 'चार राहों का समूह' होता है। जिस समास का पहला पद संख्यावाचक विशेषण हो और वह किसी समूह का बोध कराए, उसे 'द्विगु समास' कहते हैं। द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं और उनके बीच 'और' या 'या' का लोप होता है (जैसे: माता-पिता)।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:
- यथाशक्ति: 'यथा' अव्यय है, अतः अव्ययीभाव समास (सही)।
- लंबोदर: लंबा है उदर जिसका अर्थात् गणेश (तीसरा अर्थ प्रधान), अतः बहुव्रीहि (सही)।
- राजपुत्र: राजा का पुत्र (संबंध कारक का लोप), अतः तत्पुरुष (सही)।

याद रखने की ट्रिक: संख्या = द्विगु; और/अथवा = द्वंद्व; तीसरा अर्थ = बहुव्रीहि।

पैटर्न: Not Correct

प्र.75 वाक्यांश के लिए एक शब्द (One Word Substitution) **के संदर्भ में कौन सा विकल्प 'त्रुटिपूर्ण' है?**

A जो सब कुछ जानता हो - सर्वज्ञ

B जिसकी उपमा न दी जा सके - अनुपम

C जो किए गए उपकारों को नहीं मानता - कृतज्ञ

D पर्वत के पास की भूमि - उपत्यका

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
विकल्प C त्रुटिपूर्ण है क्योंकि जो किए गए उपकारों को नहीं मानता, उसे 'कृतघ्न' कहा जाता है।

'कृतज्ञ' उस व्यक्ति को कहते हैं जो किए गए उपकारों को मानता है (Grateful)। हिंदी व्याकरण में ये दोनों शब्द एक-दूसरे के विलोम भी हैं। परीक्षा में अक्सर इन दोनों के बीच भ्रम पैदा किया जाता है।

अन्य विकल्पों का विश्लेषण:
- सर्वज्ञ: सब कुछ जानने वाला (सही)।
- अनुपम: जिसकी कोई उपमा न हो (सही)।
- उपत्यका: पर्वत के नीचे की तलहटी या पास की भूमि (सही)।

अतिरिक्त जानकारी:
- पर्वत के ऊपर की समतल भूमि को 'अधित्यका' कहते हैं।
- जो कम जानता हो उसे 'अल्पज्ञ' कहते हैं।

याद रखने की ट्रिक: 'ज्ञ' का अर्थ है जानना (कृतज्ञ = उपकार जानना), 'घ्न' का अर्थ है नष्ट करना (कृतघ्न = उपकार को नष्ट करने वाला/न मानने वाला)।

पैटर्न: Not Correct

प्र.76 सामासिक पदों के विग्रह और उनके समास के नाम के आधार पर निम्नलिखित में से कौन सा विकल्प 'सुमेलित नहीं' है?

A यथाशक्ति - शक्ति के अनुसार (अव्ययीभाव समास)

B त्रिलोचन - तीन हैं लोचन जिसके अर्थात् शिव (बहुव्रीहि समास)

C राजपुत्र - राजा का पुत्र (तत्पुरुष समास)

D चौराहा - चार राहों का समाहार (द्वंद्व समास)

✅ **सही उत्तर**: D

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:
सही उत्तर विकल्प D है। 'चौराहा' (चार राहों का समाहार) में 'द्विगु समास' है, न कि 'द्वंद्व समास'। द्विगु समास की मुख्य पहचान यह है कि इसका पूर्व पद (पहला पद) संख्यावाचक विशेषण होता है और यह समस्त पद किसी समूह या समाहार का बोध कराता है। इसके विपरीत, द्वंद्व समास में दोनों पद प्रधान होते हैं और विग्रह करने पर 'और', 'अथवा', 'या', 'एवं' लगता है, जैसे 'माता-पिता' (माता और पिता)। अन्य विकल्पों का विश्लेषण: 'यथाशक्ति' में पूर्व पद 'यथा' अव्यय है, अतः यह अव्ययीभाव है। 'त्रिलोचन' में पद अपना सामान्य अर्थ छोड़कर विशेष अर्थ (शिव) प्रकट कर रहा है, अतः यह बहुव्रीहि है। 'राजपुत्र' में उत्तर पद प्रधान है और 'का' विभक्ति का लोप है, अतः यह तत्पुरुष समास है। समास के इन भेदों को समझना व्याकरणिक शुद्धता के लिए अनिवार्य है।

पैटर्न: Not Correct

प्र.77 शब्द-समूह के लिए प्रयुक्त होने वाले एक शब्द के संदर्भ में निम्नलिखित में से कौन सा युग्म 'गलत' है?

A जो पहले कभी न हुआ हो - अभूतपूर्व

B जिसकी आशा न की गई हो - अप्रत्याशित

C जो मापा न जा सके - अपरिमेय

D फेंककर चलाया जाने वाला हथियार - शस्त्र

✅ **सही उत्तर**: D

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

सही उत्तर विकल्प D है। 'फेंककर चलाया जाने वाला हथियार' 'अस्त्र' कहलाता है (जैसे: बाण, भाला, चक्र), जबकि 'हाथ में पकड़कर चलाया जाने वाला हथियार' 'शस्त्र' कहलाता है (जैसे: तलवार, गदा)। विकल्प में इन दोनों के बीच के अंतर को गलत तरीके से प्रस्तुत किया गया है। अन्य विकल्पों का विश्लेषण: 'जो पहले कभी न हुआ हो' के लिए 'अभूतपूर्व' शब्द पूर्णतः सटीक है। 'जिसकी आशा न की गई हो' उसे 'अप्रत्याशित' कहते हैं, जो 'आशा' में 'अ' उपसर्ग और 'इत' प्रत्यय के योग से बना है। 'जो मापा न जा सके' उसे 'अपरिमेय' कहा जाता है (परिमेय का विलोम)। वाक्यांश के लिए एक शब्द का प्रयोग भाषा को संक्षिप्त, सुगठित और प्रभावशाली बनाने के लिए किया जाता है। प्रतियोगी परीक्षाओं में अक्सर अस्त्र और शस्त्र के सूक्ष्म अंतर पर आधारित प्रश्न पूछे जाते हैं, जिन्हें याद रखना शब्द-सामर्थ्य के लिए आवश्यक है।

पैटर्न: Not Correct

प्र.78 संस्कृत के मूल शब्दों (तत्सम) और उनके परिवर्तित रूपों (तद्भव) के संबंध में कौन सा विकल्प 'त्रुटिपूर्ण' है?

A गोधूम - गेहूँ

B कर्पूर - कपूर

C हरिद्रा - हरियाली

D क्षीर - खीर

✅ **सही उत्तर**: C

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

सही उत्तर विकल्प C है। 'हरिद्रा' एक तत्सम शब्द है जिसका सही तद्भव रूप 'हल्दी' होता है, न कि 'हरियाली'। 'हरियाली' शब्द 'हरित' (तत्सम) या 'हरा' से विकसित हुआ है। तत्सम शब्द वे होते हैं जो संस्कृत भाषा से बिना किसी परिवर्तन के हिंदी में आए हैं, जबकि तद्भव शब्द वे हैं जो प्राकृत और अपभ्रंश से होते हुए समय के साथ सरल होकर हिंदी में प्रचलित हुए हैं। अन्य विकल्पों का विश्लेषण: 'गोधूम' का तद्भव 'गेहूँ' है, 'कर्पूर' का 'कपूर' और 'क्षीर' का 'खीर' है, जो भाषाई विकास के नियमों के अनुसार बिल्कुल सही हैं। तत्सम-तद्भव का ज्ञान न केवल शब्द भंडार को समृद्ध करता है, बल्कि यह भाषा की ऐतिहासिक यात्रा और शब्दों के मूल अर्थ को समझने में भी सहायक होता है। परीक्षा की दृष्टि से इन शब्दों के युग्मों का सटीक ज्ञान होना अत्यंत महत्वपूर्ण है।

पैटर्न: Not Correct

प्र.79 संधि के नियमों और उनके संधि-युक्त शब्दों के वर्गीकरण के आधार पर कौन सा विकल्प 'असंगत' है?

A मत + ऐक्य = मतैक्य (वृद्धि स्वर संधि)

B अनु + एषण = अन्वेषण (यण स्वर संधि)

C वाक् + ईश = वागीश (व्यंजन संधि)

D महा + ऋषि = महर्षि (वृद्धि स्वर संधि)

✅ **सही उत्तर**: D

📘 **विस्तृत एवं गहन व्याख्या**:

सही उत्तर विकल्प D है। 'महर्षि' शब्द का संधि विच्छेद 'महा + ऋषि' होता है और इसमें 'गुण स्वर संधि' प्रयुक्त हुई है, न कि वृद्धि संधि। गुण संधि के नियम के अनुसार, जब 'अ' या 'आ' के बाद 'ऋ' आता है, तो दोनों के मेल से 'अर्' (ar) हो जाता है। इसके विपरीत, वृद्धि संधि में 'अ/आ' के बाद 'ए/ऐ' आने पर 'ऐ' (जैसे: मत + ऐक्य = मतैक्य) और 'ओ/औ' आने पर 'औ' हो जाता है। विकल्प B में 'अन्वेषण' (अनु + एषण) यण संधि का उदाहरण है जहाँ 'उ' का 'व्' में परिवर्तन हुआ है। विकल्प C में 'वागीश' (वाक् + ईश) व्यंजन संधि है जहाँ वर्ग का प्रथम वर्ण (क) अपने ही वर्ग के तृतीय वर्ण (ग) में परिवर्तित हो गया है। संधि विच्छेद के इन नियमों को समझना वर्तनी की शुद्धता और नए शब्दों के निर्माण की प्रक्रिया को जानने के लिए अनिवार्य है।

पैटर्न: Not Correct

प्र.80 वर्णों के उच्चारण स्थान और उनके प्रयत्न (आभ्यंतर एवं बाह्य) के वर्गीकरण के संदर्भ में कौन सा विकल्प 'गलत' है?